रकर प्रशस्तिः

विचार एवं उदबोधन

वीर सावरकर प्रशस्तिः

विचार एवं उद्बोधन

स्वातन्त्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर वंदना शतक
(संस्कृत तथा हिन्दी गद्य पद्य अनुवाद सहित)

लेखक
डा० श्रीधर भास्कर वर्णेकर
संस्कृत विभागाध्यक्ष
[नागपुर विश्वविद्यालय]

पद्य रचना
श्री देवेन्द्रकुमार 'देव'
पूरनपुर, (पीलीभीत)

हिन्दी अनुवाद
व्याकरणाचार्य श्री ब्रजनन्दन मिश्र
[भू०पू० प्रधानाचार्य, गुरुकुल सूर्यकुण्ड, बदायूँ]

प्रकाशक
वैद्य राजाराम "जिज्ञासु" स्वाध्याय संस्थान,
बदायूँ

१९८१] [मूल्य ३ रु०

दो शब्द

प्रस्तुत पुस्तक की संस्कृत काव्य रचना श्री श्रीधर भास्कर वर्णेकर द्वारा की गयी है। इसका पद्यानुवाद श्री देवेन्द्र कुमार देव ने किया है। प्रस्तुत काव्य में १०० श्लोक हैं जो ८ स्तबकों में रचित हैं। प्रथम स्तबक में मंगलाचरण सहित वीरों के शस्त्रों की वंदना की है। दूसरे स्तवक में भारत भूमि के लिये सर्वस्व न्यौछावर करने वाले वीरों को श्रद्धाञ्जलि देते हुए भारत मां की प्रशस्ति की गयी है। तीसरा स्तवक स्वातंत्र्य वीरसावरकर के परिचय से प्रारम्भ हुआ है। चौथे स्तबक में उनके युद्धधर्म, दानशीलता, राजनैतिक निपुणता इत्यादि गुणों का वर्णन है। पांचवे स्तवक में राष्ट्रीय दूरदर्शिता जागृति गौरव गरिमा वर्णित है। छठे स्तवक में भयंकर देहत्रास एवं उनकी सहिष्णुता का वर्णन है। सातवें स्तवक में उनकी साहित्यिक सेवा में इतिहास का मार्मिक कथन तथा वक्तृत्व कला आदि गुणों का परिचय है और आठवें व अन्तिम स्तबक में उनकी तत्कालीन परिस्थितियों की परिभाषायें, स्फुट विचार व अन्य महत्वपूर्ण विषयों का वर्णन है।

काव्यशैली धार्मिक पौराणिक कथानकों तथा अलंकारिक व संस्कृत वांङ्मय की अनेक कल्पनाओं से युक्त है। इसमें रूपक, उत्पेक्षा, दृष्टान्त, व्यतिरेक, श्लेष, विषम आदि अनेक अलंकारों का सुन्दर समावेश है। अनेक स्थलों पर काव्यकारों के गहन ज्ञान और काव्य क्षमता का दिग्दर्शन होता है हिन्दी

भाषानुवाद व्याकरणाचार्य श्री व्रजनन्दन जी द्वारा किया गया है जिसमें लेखक के भावों की सहज अभिव्यक्ति बड़ी सरलता व सुरुचिपूर्वक की गई है, जिससे इस काव्य की महत्ता और बढ़ गई है।

इस प्रकार गुरुवृन्द आचार्य श्री व्रजनन्दन जी व भाई देवेन्द्र कुमार 'देव' का मैं आभारी हूं जिन्होंने काव्य को गौरव प्रदान कर समाज के प्रति न केवल अपने दायित्व का निर्वाह किया है वरन् एक 'महान् वीर' की प्रशस्ति करके अपनी लेखनी को सार्थकता प्रदान की है।

इति

आयुर्वेदाचार्य ज्ञानेन्द्र प्रकाश बी०ए०

३१ अक्तूबर, १९८०
कार्तिक वदी ८, २०३७ वि० सं०

सम्मतियाँ

स्वातन्त्र्य वीर सावरकर की जीवनी अनेक रूपों में अनेक भाषाओं में प्रसारित होना चाहिए। हिंदुस्थान को सुरक्षित रखना हो, समर्थ रखना हो, एक रखना हो तो विना सावरकरवाद के इस समय कोई मार्ग या विकल्प नही है।

श्री राजाराम जिज्ञासु का संकल्प है कि वह इस संस्कृत शतक को हिंदी अनुवाद सहित प्रकाशित करेंगे। मैं उनकी सफलता चाहता हूँ। संकल्प सिद्ध करने में हिंदू राष्ट्र ही सहयोगी होगा।

उद्धरेत् आत्मानमात्मना,

गोपाल गोडसे

प्रधान अखिल भारतीय महासभा

९–२–८१

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि "स्वाध्याय संस्थान बदायूँ" स्वातन्त्र्य वीर सावरकरप्रशस्तिः' नामक पुस्तक का प्रकाशन करने जा रहा है। हिन्दू जाति को दिशा दर्शन का कार्य जिन्होंने जीवन के अन्तिम क्षणों तक किया ऐसे वीर की प्रशस्ति को प्रकाशन करने से स्वाध्याय संस्थान का यह प्रयास वस्तुतः वरेण्य है। मैं हृदय से इनकी सफलता चाहता हूँ।

ब्रज लाल बर्मा उदयपुर

बौद्धिक शिक्षक

राजस्थान

विषयानुक्रणिका

विदेशियों के अनुसार हिन्दू धर्म

यदि मुझ से पूछा जाय कि किस देश में मानव मस्तिष्क ने अपनी मुख्यतम शक्तियों को विकसित किया, जीवन के बड़े से बड़े प्रश्नों पर विचार किया और ऐसे समाधान ढूंड निकाले, जिनकी ओर प्लेटो और कान्ट के दर्शन का अध्ययन करने वालों का ध्यान भी आकृष्ट होना चाहिए, तो मैं भारत वर्ष की ओर संकेत करूंगा।

— जर्मन विद्वान प्रो० मैक्समूलर द्वारा सन् १८५८ में महारानी विक्टोरिया को भेजे गये एक पत्र से

भारतीयों के प्रति सेवा का कार्य कर देने वाला कोई भी व्यक्ति कृतज्ञता का सदा विश्वास कर सकता है। परन्तु उनका अपमान करने पर वे अपना कलंक मिटाने के लिए प्राणों तक की बाजी लगा देते हैं। यदि कोई कष्ट में पड़ा हो और उनकी सहायता माँगे तो वे अपने आपको भी भूलकर उसकी सहायता के लिए दौड़ पड़ेंगे।

जब उन्हें किसी अपकार का बदला चुका लेना होता है, तब वे अपने विरोधियों को सचेत कर देने से चूकते नहीं। फिर प्रत्येक व्यक्ति कवच धारण करके हाथ में कुन्त ले लेता है। युद्ध में भागने वालों का तो पीछा करते हैं परन्तु शरण में आये हुओं का वे बध नहीं करते।

— चीनी यात्री हुयेनसांग (६४५ ई०)

ध्यान की प्रणाली को हिन्दू लोगों ने जन्म दिया है। उनमें स्वच्छता एवं शुचिता के गुण वर्तमान हैं। उन लोगों में

विवेक है तथा वे वीर हैं।

ज्योतिष, गणित, आयुर्वेद व अन्य विद्याओं में हिन्दू लोग आगे बढ़े हुए हैं। प्रतिमा निर्माण, चित्र लेखन, उन्होंने पूर्णता तक पहुंचा दिया है। उनके पास काव्य, दर्शन, साहित्य तथा नैतिक शास्त्रों का संग्रह है।

— अल्जहीज (आठवीं शताब्दी)

समस्त भारतीय चाहें वे प्रसादों में रहने वाले राजकुमार हों अथवा झोपड़ी में बसने वाले प्रजाजन, संसार में सर्वोत्तम शील सम्पन्न लोग हैं, मानों उनका जातिगत धर्म हो।

उचित और न्याय व्यवहार का प्रत्युत्तर वे अवश्य देते हैं, तथा दयालुता एवं सहानुभूति के किसी कर्म को भूलते नहीं।

— लार्ड विलिंगडन

हिन्दू इतने ईमानदार हैं कि न तो उन्हें अपने दरवाजों में तालों की आवश्यकता है और न कोई बात निश्चय हो जाने पर उसकी प्रामाणिकता के लिए किसी लिखापढ़ी की।

— यूनानी इतिहासकार स्ट्रैबी ई०पू०

भारतीय चरित्र की आन्तरिक दयालुता, उनके स्वभाव की सुन्दरता और सरलता ही उनको वास्तविक बन्धुत्व की भावना प्रदान करती है। ऐसा ज्ञात होता है कि उनमें गहराई में बैठा एकात्मक बोध ही है, जिसका उन्हें स्वयं भी पता नहीं हर एक में लक्षित हो रहा है।

— पोलेण्ड की राजकुमारी दिनोस्का

समर्पण और स्मृति

एक ऐसा व्यक्तित्व जिसकी अपेक्षा देश को सदा बनी रहेगी जिनका समग्र जीवन महर्षि दयानन्द जी के विचारों का प्रसाद था और हम भारतीयों के लिए गौरवमय आदर्श। उन्हीं श्रद्धेय क्रान्तिकारियों के अग्रदूत "श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा' को सादर समर्पित

श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा एक स्तुत्य जीवन

प्रस्तुत पुस्तक "स्वातन्त्र्य वीर शतकम् ." के नायक वीर सावरकर जी श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा के योग्य शिष्य थे। शिष्यता की इस परम्परा में श्री कृष्ण वर्मा भी एक मजबूत कड़ी रहे हैं। क्योंकि उनकी प्रेरणा के स्रोत थे महर्षि दयानन्द जी सरस्वती। सन् १८७७-७८ में उन्होंने स्वदेश प्रेम और धर्मप्रचार का वीणा उठाया।१८७६ ई० में इंग्लैंड जाकर प्रथम भारतीय के रूप में आक्सफोर्ड विश्व विद्यालय से एम० ए० और बैरिस्टरी उत्तीर्ण की। १८८१ में बर्लिन और इंग्लैंड में प्राच्य विद्या के सम्मेलनों में भी भारत का प्रतिनिधित्व किया। वहां इंग्लैंड एम्पायर क्लब में वे प्रथम वार एक भारतीय व्यक्ति के रूप में सदस्य मनोनीत हुये। उन्होंने इन्डियन सोशोलोजिस्ठ पत्रिका का सम्पादन करके राजनैतिक सामाजिक और धार्मिक सुधार के क्षेत्र में जागृति प्रदान की। लंदन प्रवासी भारतीयों का संगठन बनाने की दृष्टि से जुलाई सन् १८७५ में उन्होंने वहां एक इंडियन हाउस की स्थापना की

तथा कोष संकलन कर महर्षि दयानन्द शिवाजी राणा प्रताप आदि नामों से उत्साही छात्रों को छात्र वृतियाँ प्रदान कीं। हमारे नायक वीर सावर कर जी एवं श्री मदन लाल ढींगरा आदि क्रान्तिकारी युवकों ने यहीं उनके विचारों से प्रभावित हो उनसे देश भक्ति की दीक्षा ली थी। अपनी बढ़ती विद्रोही नीतियों के कारण उन्हें इंग्लैंड से बाहर जाना आवश्यक हो गया और उन्होंने पेरिस को अपना कार्य क्षेत्र बनाया वहां भी इन्डिया हाउस की स्थापना कर जन आन्दोलन को गति देते हुए साम्राज्य शाही के विरुद्ध लंदन, स्वीटजरलैंड, इटली, जर्मनी, जावा, इजिप्ट मलाया, आदि देशों के पत्र पत्रिकाओं में क्रान्तिजनक लेख प्रकाशित कराए। क्रांति के लिए बम बनाने की विधियां प्रकाशित कीं भारत आने वाले स्टीमरों द्वारा क्रांतिकारियों को शास्त्रास्त्र भेजने के अपराध में वहां की सरकार द्वारा राज्यद्रोही घोषित किये गये। और जीवन के अन्तिम दिन जिनेवा में बिताते हुए ३१ मार्च १९३० ई० को स्वतन्त्र हिन्दू राष्ट्र के चिन्तन में मृत्यु का वरण कर लिया। कहा जा सकता है कि उन्होंने अपने गुरु युगदृष्टा महर्षि दयानन्द के प्रति ऋषि ऋण का दायित्व पूर्णतः निर्वाह किया। दयानन्द जी ने परोपकारिणी सभा की सदस्यता से भी वर्मा जी को अलंकृत किया था।

महान देश भक्ति की विचार धारायें कितनी प्रभावी एवं आदर्शवादी थीं कि मृत्यु के उपरान्त भी एक भारतीय देशभक्त व्यक्ति का अन्त्येष्टि संस्कार पहिली बार विदेशियों के अपने देश में वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

प्रकाशकीय वक्तव्य

स्वा० वीरसावरकर ने अपने गुरु श्री श्यामजी कृष्ण और उन अविस्मरणीय विभूति के पूज्य गुरुवर, धार्मिक कीर्ति के अग्रदूत म० दयानन्द सरस्वती के शब्दों में वैदिक वाङ्मय के आधार पर आर्य आ र्यभाषा और आर्यवर्त्त देश के उद्घोषों के य थार्थक्रम से हिन्दी हिन्दू हिन्स्थान आदि उद्घोषों द्वारा प्रकाशखंभ की भांति तिल तिल जलकर जन मानसो को प्रकाश दिया। प्राच्य वर्णव्यवस्था के इतिहास में आर्य और दस्यु अथवा आर्य और अनार्य दो ही भेद पाये जाते हैं। आर्य का अर्थ श्रेष्ठ होता है। जीवन में श्रेष्ठता धारण करनी चाहिए इस दृष्टि से स्वा० दयानन्द ने हमारा ध्यान आर्य शब्द की गौरवता की ओर खींचा। प्राणिमात्र के हितैषी उस महा मानव ने आर्य समाज की स्थापना कर यह सोचा था कि वह अपने सार्वभौमस्वरूप को प्राप्त करेगा किन्तु हमारे अज्ञान के फलस्वरूप ऐसा न हो सका। मलिन संस्कार युत व्यक्तियों के आर्य सम्बोधन से उनके अहंकार की वृद्धि हुई। जो रोग उस देश में कुछ समय से फैला हुआ था। लोग विना विद्या प्राप्ति के ही मन में भौतिक वाद की आकांक्षा रखते हुए ब्राह्मण और क्षत्रिय आदि शब्दों के गौरव से अपने अहंकार की पुष्टि करते हुए ब्राह्मण और क्षत्रिय कहलाना चाहते हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से अन्य देश वाले भले के लिए हमें आर्य वंशज मानते हैं किन्तु स्वा० दयानन्द के शब्दों

में कम से कम १ घंटा ध्यान योग द्वारा उपासना करने वाला, ईश्वर को सर्वत्र और सर्वव्यापक समझते हुए कर्म करने वाला तथा आर्य समाज संस्था के उद्देश्य के अनुसार श्रेष्ठ व सदाचारी होना चाहिए, जो सम्भवतः कुछ अपवाद को छोड़कर स्वयं संस्था के सदस्यों में उनकी गणना कुछ प्रतिशत से अधिक नहीं। ऐसी परिस्थितियों में वीर सावरकर जैसे मस्तिष्क वाले व्यक्तियों ने सोचा कि उपर्युक्त आर्य आदर्श के लक्ष्य को पूराकरने के लिए पहले संगठन करना आवश्यक है। क्योंकि आज की परिस्थितियों में हमारे हिन्दू धर्म के मूलभूत अंग पारसी बौद्ध जैन धर्म और शिष्य (सिख)आदि हिन्दू शब्द के उदघोष से जितने निकट लाए जा सकते हैं उतने आर्य शब्द से नहीं। कारण स्पष्ट है कि एक आमिष भोगी एक आर्य से चिढ़ेगा हिन्दू से नहीं इसी प्रकार मूर्ति पूजा साकार निराकार आदि अनेक प्रश्न हैं जो उनकी दृष्टि में बाधक हैं। इन की दृष्टि में आर्य शब्द पढ़ते ही सैद्धान्तिक व आत्मावलोकन से मन संकोच अनुभव करने लगता है उपर्युक्त कारणों को देखते हुए हमारे चरित्र नायक वीर सावरकर ने देश वासियों को एकरूपता में लाने हेतु हिन्दू हिन्दी और हिन्दुस्थान तथा हिन्दू राष्ट्र की प्रेरणा दी वीर सावरकर जी के सम्बन्ध में कई व्यक्ति उनके मुस्लिम विरोधी और हिंसा में विश्वास करने वाले व्यक्ति के रूप में समझते हैं। किन्तु यदि थोड़ा भी विचार किया जाने लगे तो उनकी यह धारणा निर्मूल हो जाती है। यदि वे मुस्लिम विरोधी होते तो देश विभाजन के विरुद्ध अखण्ड भारत का

उद्घोष नही करते जिसमें कि मुसलमानों का रहना अनिवार्य भी था। हाँ, जो मुसलमान या ईसाई किन्ही कारणों से लोभ या भय वश विछुड़ गये हैं। और यदि वे पूर्व समाज में निष्ठा रख कर आना चाहते हैं तो उनका सहर्ष स्वागत किया जावे उनकी यह मान्यता थी। इसी प्रकार अछूत और दीन दलित व युगउत्पीड़ित निर्बलों को समाज में सम्मान देने की बात कांग्रेस से पूर्व महर्षि दयानन्द के विचारों से प्रभावित होकर कही थी। भाषा के प्रश्न पर भी जिस प्रकार स्वा० दयानन्द ने गुजराती भाषी होकर हिन्दी भाषा के लिये बल दिया हमारे चरित्र नायक ने भी मराठी भाषी होकर हिन्दी के प्रति आवाज उठाई, और उसे राष्ट्र भाषा बनाने के लिये संघर्ष किया।

अब जहाँ तक हिंसा अहिंसा में विश्वास करने की बात है, शास्त्रकारों ने "शठे शाठ्यं समाचरेत् का आदेश दिया है। स्वामी दयानन्द जी ने भी अपने उपयुक्त शब्दों में इसे यथायोग्य व्यवहार का रूप दिया है। इसी प्रकार राष्ट्रीय दिशा में राष्ट्रपिता गांधी के प्रिय ग्रंथ गीता में भगवान कृष्ण कहते हैं कि शस्त्र ले कर दुष्टों का नाश करो। व्यर्थ सोच विचार छोड़ कर आततायी को एक दम मार डालो। यह है हमारा धर्म।

राष्ट्र को जीवित रखना हमारा कर्तव्य है। उस कर्तव्य की पूर्ति के विषय में सावरकर जी की मान्तता थी कि तदर्थ यदि हमें हिंसा भी करनी पड़े तो वह भी पुण्यकारक होगी।

हमारे पूर्वज सशस्त्र थे। हमारे देवता भी सशस्त्र रूप से शोभायमान हैं।

परम पूज्य सावरकर जी का विचार था कि हिन्दू इस देश की रीढ़ की हड्डी है। यदि वह समर्थ होगा तो देश भी समर्थ बनेगा। राष्ट्रीय सुरक्षा और एकता का बलिदान कर समझौते की नीति के वह निस्संदेह विरोधी थे। इसी लिये उनका यह प्रसिद्ध उदघोष रहा कि राष्ट्र की स्वतन्त्रता हेतु संघर्ष में यदि मुसलमान हमारे साथ आते हैं तो उनका पूर्ण स्वागत है। यदि नही आते हैं तो हम अकेले ही, और यदि विरोध में आते हैं तो हम विरोध लेकर भी स्वतन्त्रता हेतु संघर्ष से मुख नही मोड़ेंगे।

आज हम कृष्ण को युगपुरुष, देवता और ईश्वर के रूप में मानते है, तो केवल उनकी इस दूरदर्शी नीति के कारण ही कि अर्जुन के रण स्थल में मोहासक्त होने पर जिस नीति का संदेश देकर अर्जुन को प्रेरणा दी थी कि, "यह तुम्हारे बन्धु वान्धव जो अन्याय के बल पर तुम्हारे सम्मुख लड़ने का उद्यत हुए हैं इनको मारना ही धर्म है यह महाभारत का उपदेश ही हिन्दुओं का धर्म ग्रन्थ गीता कहलाता है।

आज लोग कृष्ण की इस नीति की अवहेलना करके और महाभारत में वर्णित उनके तत्वज्ञान नित्य सन्ध्योपासन आदि दिनचर्या को अपनाए बिना क्रूर शासक कंस के साम्राज्य के विध्वंश हेतु आयोजित रहस्य लीलाओं को मात्र नाचने कूदने वाला स्वरूप सम्मुख रखकर पथ भ्रष्ट हो रहे हैं उनकी

विचित्र लीलाओं को व्यावहारिक रूप न दे कर केवल गीता पाठ द्वारा मुक्ति मिलेगी यह संदेहास्पद है। आचरण विहीन ब्राह्मण और वेद का विद्वान रावण प्रति वर्ष हमारे सामने मार कर दिखाया जाता है।

हिन्दुओ ! अब इससे कुछ आगे बढ़ना होगा। प्रस्तुत पुस्तक उस महान तपस्वी भारत माता के सपूत वीर सावर-कर के प्रति एक हार्दिक श्रद्धांजलि है। प्राय: लोगों की कहानी उनकी जीवनलीला के साथ ही समाप्त हो जाती है, किन्तु कुछ महापुरुष ऐसे भी होते हैं जिनके कार्यों की कहानी कभी समाप्त नही होती। हमारे चरित्र नायक कर्मवीर सावरकर जी एक इसी प्रकार की क्रान्ति के अग्रदूत रहे। उन्होंने भारत माता तथा हिन्दू जाति की पीड़ाओं को अत्यन्त गम्भीर रूप से अनुभव किया।

वह समय अवश्य आयगा जब लोग उनके विचारों को प्रकाशस्तम्भ के रूप में अंगीकार करेंगे। उन्होंने जीवन भर इस देश और धर्म के लिए असहनीय कष्टों को सहन किया। अन्तिम श्वास तक देश चिन्ता में निमग्न रह कर आत्माहुति दे दी।

हिन्दी साहित्य में यद्यपि सावरकर जी की जीवनी प्रकाशित हुई है तथापि संस्कृत हिन्दी काव्यों की शृङ्खला में ऐसे काव्य का पूर्णतया अभाव था।

अत: ऐसे वीर द्रष्टा के प्रति इस प्रशस्ति को प्रकाशित

कर मैं उनके ऋण से उऋण होने का प्रयास कर रहा हूँ। मैं आशा करता हूँ कि यह पुस्तक अपने भारत देश तथा अपनी हिन्दू जाति को नव चेतना प्रदान करेगी। इस पुस्तक के अध्ययन द्वारा भारत के सपूत वीर सावरकर के बलिदानों को सादर स्मरण करते हुए हिन्दुत्व की रक्षा हेतु सन्नद्ध होंगे एसी कामना है। प्रभु बल दे। हिन्दू सजग हों। केवल यही अभिलाषा है।

राजाराम जिज्ञासु
प्रकाशक
स्वाध्याय संस्थान, बदायूँ,
उत्तर प्रदेश (भारत)

हिन्दू सम्मेलन खुलना (बंगाल)

वीर सावरकर जी की ललकार

भाइयो ! यह निश्चय मानो कि भारत के मुसलमान हिन्दुओं के साथ मिलकर एक राष्ट्र बनाने को उद्यत नही हैं। अतः कांग्रेस द्वारा हिन्दू मुस्लिम एकता हेतु जितना अधिक प्रयास हो रहा है हिन्दू मुसलमान के बीच की सदियों पुरानी खाई उतनी ही अधिक चौड़ी होती जा रही है। भाषा, धर्म व जातियों को इकट्ठा करने से एकता नही हो सकती, क्योंकि भारतीय मुसलमान पृथक राष्ट्र बनाने का निश्चय कर चुके हैं। वे भाषा लिपि राजनीति आदि दृष्टियों से स्वयं हिन्दुओं से अलग रहने को कटिबद्ध हैं।

हिन्दुओं को यह बात सदा ही याद रखना चाहिए कि इस देश में एक नही दो जातियां रहतीं हैं। काँग्रेसी भाइयों को भी यह बात समझना चाहिए। परन्तु वे तो अन्धी आँख पर दूरबीन लगा रहे हैं। मुसलमानों के न चाहने पर भी उन की मित्रता के लिए दौड़ रहे हैं। मित्रता तो दोनों ओर से ही सही होती है, केवल एंक ओर से नही। जिस प्रकार आजकल मुसलमान आगे बढ़ कर लाभ उठा रहे हैं उससे सिद्ध होता है कि हमें पुनः अपने देश में गुलाम बनना होगा। मैं आप से स्पष्ट कहता हूं कि ब्रिटिश नोकरशाही की तुलना में आज का मुसलमान ज्यादा अच्छी हालतमें है जब कि हिन्दुत्व का पतन

हुआ है। कांग्रेस ने शासन सूत्र संभालते ही हिन्दुओं की बलि देकर मुसलमानों से मित्रता की कोशिश की, परन्तु मुसलमान कभी सच्चे दिल से नहा मिला।

काँग्रेसी मन्त्री हिन्दू वोट से चुने जाने पर भी हिन्दू की उपेक्षा करके मुस्लिम तुष्टीकरण में लगे रहते हैं। मैं जानता हूँ कि हमारे कांग्रेसी मित्र अच्छे हैं, देशभक्त हैं, उनका उद्देश्य भी अच्छा है, परन्तु उनकी नीति प्रतिदिन पतित हो रही है वह हिन्दूविरोधी, साम्प्रदायिक तथा अराष्ट्रीय भी है। यदि यही नीति चलती रही तो मुसलमान देश में हावी हो जायगे और हिन्दुओं का अस्तित्व ही खतरे में होगा। यदि हिन्दू को जीवित रहना है तो यह नीति बदलनी ही होगी।

यदि हम यह निश्चय कर लें कि आगे वोट उसी को देंगे जो हिन्दुत्व की रक्षा का वचन देंगे, तो आप देखेंगे कि कई प्रान्तों में शुद्ध हिन्दू मन्त्रिमण्डल स्थापित होंगे। ऐसी दशा में देश का रूप ही और होता। यदि यू० पी० में कोई हिन्दू मन्त्रिमण्डल होता तो वह मुसलमानों के अनुपात के अनुसार उनके लिए नौकरी आदि का न्याय्य करता हुआ भी हिन्दू हितों की रक्षा करता।

यदि देश में ऐसे योग्य और साहसी व्यक्ति हिन्दुओं द्वारा चुने जाते, तो आज हिन्दू देवियों को मुस्लिम गुण्डों द्वारा आज ऐसी भीषण यातनाओं का सामना न करना पड़ता। उस दिशा में यदि यू० पी० में कोई हिन्दू लड़की

भगाई जाती तो उस गुण्डे को इतना कठोर दण्ड दिया जाता कि वह दुष्ट हिन्दू लड़की को छूने में भी इतना डरता जितना योरोपियन लड़की को। हिंदू लड़कियों के विषय में भी ऐसा किया जाता तो सीमा प्रान्त की यह लूट वन्द हो जाती क्या वर्तमान मंत्रियों में यह साहस है? नही, वे तो इस नीति का विरोध करते हैं। वे तो हिन्दू मतों से चुने होंने पर भी मुस्लिम हितों की रक्षा के लिये बचनवद्ध हैं। वे भाव से बुरे नही परन्तु उनको नीति बुरी है। मुसलमानों को देखिये उनकी क्या नाति है? उन्होंने उसी को चुनकर भेजा है जो उनमें कट्टर मुसलमान था। यही कारण है कि बंगाल और पंजाब दो प्रान्तों में ऐसे मंत्रिमण्डल बने जो स्पष्टत: अपने को मुस्लिम लीगी कहते हैं।

बंगाल के प्रधान मंत्री श्री फसलुलहक विना हिचक अपने को खुले आम मुस्लिम लीगी कहते हैं। मुस्लिमपने से भरी हुई वक्तृताएँ देते हैं। अपने शासन को साफ़ शब्दों में मुस्लिम राज्य कहते हैं और अपनी जाति के लिये जितना कर सकते हैं, करते हैं। उन्होंने अपने प्रान्त में ६० प्रतिशत नौकरिया मुसलमानों के लिये सुरिक्षत रखी हैं। एक मुस्लिम के नाते मैं उसकी प्रशसा करता हूँ। मैं उसे धन्यवाद देता हूं। अब पंजाब के प्रधान मंत्री सर सिकन्दर हयात खां को लीजिये इनके साहस को देखिये। ये मुसलमानों के लिए सब कुछ कर रहे हैं। क्यों? क्योंकि वे इसी शर्त पर चुने गए हैं कि

मुस्लिम हितों की रक्षा करेंगे। दूसरी ओर हिन्दू टिकट से चुने गये मन्त्रियों की दशा देखिये । मुस्लिम मंत्री मुस्लिम लीग के सदस्य हो सकते हैं। परन्तु हिन्दूमंत्री हिंदू महासभा के सदस्य नही हो सकते। हिन्दू वोट से निर्वाचित हुए कांग्रेसी मत्री हिन्दू सभा के सदस्यों से कहते हैं तुम कांग्रेस से ढकेल कर बाहर कर दिये जाओगे। मानो राष्ट्रीयता का अभिप्राय यह हो कि हम हिन्दू होना हो छोड दें। मानों राष्ट्रीय संस्था से हिंदुओं का कुछ सम्बन्ध ही नही।

मैं साफ कहूंगा "मैं राष्ट्रीय हूँ" कांग्रेस के चार आने के टिकट पर नही, अपितु अपने हृदय के टिकट पर। जब तक मेरे देह में रक्त की १ बूँद भी शेष है मैं अपने को हिन्दू कहता और हिन्दुत्व के लिये लड़ता रहूंगा। हिन्दुओं ! निश्चय करो कि जब आगामी चुनाव आवें और कोई प्रतिनिधि आप से वोट मांगे तो आप साफ साफ पूछना क्या तुम हिंदू हो ? यदि वह कहें नही, मैं तो राष्ट्रीय हूँ तो आपने कहना, 'जाओ जहां राष्ट्रीय वोट मिलता है। या प्रतीक्षा करो जब तक राष्ट्रीय वोट नहीं आते, यहां तो हिंदू वीर हैं।' जब चुनाब पद्धति ही सारी साम्प्रदायिक है और उससे चुने जाने में शर्म नही तो फिर हिंदू कहलाने में क्या शर्म पड़ी है ? चुनाव के दिन आप बड़े गर्व से अपने को हिंदू लिखाते, हिंदू कहते हैं और हिंदू से वोट मांगते हैं लेकिन चुनते ही अपने वोटर को ठुकराकर अपने को राष्ट्रीय कहने लगते हैं। यह धोखा और विश्वास-घात महापाप है।

हिन्दू नीति

इसलिये मैं आप से कहता हूँ कि अब से आगे आपकी राजनीति हिंदू राजनीति होनी चाहिये। राष्ट्रनीति हिंदू राजनीति के विना चल ही नही सकती। इसलिये प्रत्येक हिंदू को उन लोगों को वोट देना चाहिये, जो स्पष्टतः हिंदूरक्षा के लिये बद्ध हों। समझिये मैं ही यदि किसी प्रान्त का प्रधान मंत्री बनाया जाता हूँ (यद्यपि मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि में कभी भी व्यवस्थापिका सभा सदस्य वनने को खड़ा न होऊंगा।)तो में क्या करूंगा? ज्यों ही मुझे समाचार मिलता कि यू०पी० में मुहर्रम के कारण बाजा बंद कर दिया गया है और विवाह पार्टी भी बाजे के साथ निकलनी बंद कर दी गई है तो में तुरन्त मध्य प्रान्त में हिन्दुओं को आज्ञा देता कि मस्जिदों में दी जाती हुई अजान को सुनना बंद कर दें।

क्योंकि इससे १२ मील दूर स्थित मंदिरों की पूजा में विघ्न पड़ता है। इसका यही हल है। मैं कहता हूँ कि यदि मस्जिद के सम्मुख बाजा बजाने पर उनको आक्षेप है तो मस्जिद सार्वजनिक सड़कों पर बनाने ही क्यों दी जाती हैं। क्यों नही मुसलमान हिंदू साधुओं की तरह जंगलों में जाकर ध्यान लगाते ? ऐसा साहस पैदा करने का केवल एक ही ढंग है कि आप हिंदू को वोट दें और हिंदू को ही चुनें। इस प्रकार ७ प्रांतों में शुद्ध हिंदू मंत्रिमंडल स्थापित होंगे।

एकता की प्रार्थना

अंत मैं में आप से कहता हूँ कि आप सनातनी, समाजी सिक्ख, बौद्ध, आपस के सर्व भेद भाव भुलाकर, छुआछूत मिटा कर, २८ करोड़ के २८ करोड़ एक व्यक्ति की भांति खड़े हो जावें। हम सब एक है, हमारी भाषा एक हमारी संस्कृति एक है। हमारा इतिहास एक है। सबसे बढ़कर हमारा नारा एक है। यह देश हमारा है। मुसलमानों का नही, अंग्रेजों का नही, किसी और का नही।

अहमदाबाद (सन १९३७ ई०)

(हिन्दुस्थान सर्वदा एकरस एवं अविभाज्य ही रहना चाहिये)

वर्तमान समय में भारतवर्ष पर जो कृत्रिम एवं राजनैतिक बलात्कार जनित प्रान्तीय बटवारा लादा गया है उसके विचार को अलग हटाया जाय तो हम पर यह बात स्पष्ट होगी कि हम सब रक्त, धर्म तथा देश इन प्रबल अविभाज्य एवं टिकाऊ बन्धनों के द्वारा परस्पर के साथ जकड़े गये हैं। चाहे जो हो हमें अपना ध्येय समझ कर इस बात को निश्चित रूप से विघोषित कर देना चाहिए कि कल का हिन्दुस्थान कश्मीर से लेकर रामेश्वर तक और सिन्धु से लेकर आसाम तक केवल संयुक्त होने के नाते से ही नही अपितु अभिन्न राष्ट्र के नाते से एकरस एवं अविभाज्य ही रहना चाहिये।

हिन्दू शब्द की व्याख्या

सबसे पहले हमें हिन्दुत्व के अर्थ ही को प्रकट करना चाहिये उस शब्द की व्याख्या और व्याप्ति का स्पष्टीकरण होकर जब वह सुचारु रूप से हृदयसात हो जायेगी तभी हमारे स्वकीयों के हृदयों में बार २ उठने वाली विविध प्रकार की आशंकाओं का निराकरण होगा और हमारे विरोधक हमारे विरोध में जो नाना प्रकार के आन्दोलन एवं भ्रम लोगों में प्रस्तुत करते हैं, उन्हें भी मुहतोड़ उत्तर मिलकर शान्त किया जा सकेगा।

हिन्दू शब्द की एक निश्चित व्याख्या पहिले ही हमारे हाथ लगी है ।

जो इस प्रकार है :-

आसिन्धु सिन्धु पर्यन्ता यस्य भारत भूमिका ।
पितृभूः पुण्यभूश्चैव स वै हिन्दुरिति स्मृतः ॥

जो कोई भी व्यक्ति सिन्धु से लेकर समुद्र तक फैली हुई उस भारत माता भूमि को अपनी पितृभू तथा पुण्यभू मानता है और अधिकृत रूप से यह बात कह सकता है ऐसा प्रत्येक व्यक्ति हिन्दू कहलाने का अधिकारी है ।

यहीं पर मुझे यह बात स्पष्ट कर देनी होगी कि जिन धर्मों का उद्‌गम भारतवर्ष में हुआ है ऐसे कुछ अन्य धर्मों के अनुयायी समझे जाने वाले व्यक्तियों को भी हिन्दू कहना प्रायः असम्वद्ध ही होगा। क्योंकि वह तो हिन्दुत्व का एक अंग या उदारणमात्र है। हिन्दू होने के लिये किसी व्यक्ति को केवल इतना ही कहना पर्याप्त न होगा कि वह ऐसे धर्म का अनुगामी है जिसका उद्‌गम भारतवर्ष में है अर्थात वह भारत वर्ष को अपनी पुण्यभूमि मानता है। उसके हिन्दू होने के लिये यह भी आवश्यक है कि वह इस देश को अपनी पितृ भू भी मानता है समूचा हिन्दू जगत जहां पर उसके धर्म का जन्म हुआ उसी अकेले पुण्यभू के एक मात्र बन्धन से ही केवल नहीं किन्तु एक संस्कृति एक भाषा एक इतिहास और इससे भी अधिक

महत्व बात यानी एक 'पितृम्' के भी बन्धन से स्वमेव निबद्ध है और इन्हीं बन्धनों के कारण वह एक स्वयं सिद्धि राष्ट्र तथा स्वतन्त्र्य लोक समाज प्रमाणित होता है। चीनी तथा जापानियों को अपनी अपनी निजी और प्रथक्करूप की वंश परम्परा भाषा संस्कृति इतिहास तथा देश आदि बातें हैं जो उनका और हमारा जीवन एक राष्ट्रीय बनाने के लिए हमारे साथ पूर्ण अंशों में निबद्ध नहीं हुई है वे पुण्य भूमि कीएकता के कारण हमारे धर्म बान्धवों के नाते से हमारे गले लग सकते हैं। किन्तु समूची हिन्दू जाति को एकत्रित करने वाली किसी हिन्दू महासभा के सम्बन्ध में वे समान स्वरूप की आस्था नहीं दिखायेंगे और न समानता पूर्वक उसमें अपना हाथ बंटायेंगे क्योंकि वह ऐसा कर ही न सकेंगे इसलिए मैं आपके सामने यह प्रस्ताव रखता हूं कि हमारे विधि विधान में उपर्युक्त पूरा श्लोक ज्यों का त्यों उसके उपर्युक्त स्पष्ट तथा निस्संदिग्ध अर्थ सहित समाविष्ट किया जाना चाहिए। हिन्दूओं को राष्ट्र के नाम से पुकारने में जो लोग आना कानी करते हैं वे ही ग्रेटब्रिटेन यूनाइटेड स्टेट्स रूस जर्मनी तथा अन्य देश निवासियों को राष्ट्र के रुप में मानते ही हैं। उनसे मैं पूछता हूं कि उन लोगों को भी जो स्वमेव राष्ट्र के रूप में समझा जाता है इसकी क्या कसौटी है। उदाहरण लिए ग्रेट ब्रिटेन ही लीजिये चाहे जो हो उनमें तीन विभिन्न भाषायें तो हैं ही। गत्काल में उनमें परस्पर के साथ प्राण घातक युद्ध छिड़ गये हैं। साथ साथ यह भी पता चलता है कि उनमें विभिन्न बीजों का लहू का और जातियों का संकर भी हो गया है।

अर्थात् ऐसी स्थिति होते हुए भी जब आप लोग इन्हें इस समय एक देश एक भाषा एक संस्कृति एवं अनन्य पुण्य भूमि का होने के नाते से एक राष्ट्र मानते हैं। तब तो वे हिन्दू भी इसी प्रकार से समान जीवन तथा समान निवसन के युगानुयुग व्यतीत होने के कारण परस्पर के साथ समरस बन बैठे हैं। जिनके लिए हिन्दुस्तान इस स्पष्टार्थ वाचक नाम की अनन्य पितृभूमि है। जिसमें उनकी उन सारी प्रचलित भाषाओं का उद्गम् हुआ है जो दिनों दिन परिपुष्ट होती जाती है जिनके पास संस्कृत नामक ऐसी एक समान भाषा हैं जो आज भी उनके धर्म ग्रन्थों की तथा साहित्य की सर्व साधारण भाषा मानी जाती है और प्राचीन धर्म शास्त्रों तथा उनके पूर्वजों की सूक्तियों के पवित्रतम संग्रह के नाते जिसका सर्वत्र गौरव किया जाता है। अनुलोभ तथा प्रतिलोभ विवाहों द्वारा जिनका बीज तथा रक्त मनु जी के समय से लेकर आज दिन तक लगातार परस्पर में सम्मिश्र होता आया है जिनके सामजिक उत्सव तथा संस्कार विधि इग्लैण्ड में दिखाई देने वाले संस्कार एवं विधियों से समानता मे लशे मात्र भी कम नही है वैदिक ऋषि जिनके लिये एकसा अभिमान का विषय है पाणनिय और पतंञ्जलि जिनके व्याकरण कार हैं भवभूति तथा कालिदास जिन के कविवर है श्री राम तथा श्री कृष्ण, शिवाजी तथा राणा प्रताप गुरु गोविन्द तथा वीरवन्दा जिनकी वीर विभूतियां एवं समानस्फूर्तिस्थान है बुद्ध तथा महावीर, कणाद तथा शंकरा चार्य जिनके ऐसे अवतारी आचार्य हैं जिनको तत्ववेता होने के नाते से सर्वत्र समानता पूर्वक

सम्मानित किया जाता है अपनी प्राचीन तथा पवित्र संस्कृत भाषा के अनुरूप ही जिनकी अन्याय लिपियाँ भी उस एक मात्र प्राचीनतम नागरी लिपि में से ही उत्पन्न हुई है, जो कि गत् कई शताब्दियों से उनके पवित्रतम लेखों की समान साधन बन बैठी है, जिनका प्राचीन और अर्वाचीन इतिहास एक ही है जिनके मित्र तथा शत्रु भी एक ही हैं जिन्होंने एक ही सी आपत्तियों का सामना किया है और एक साथही उनपर विजय भी पाई है और जो राष्ट्रीय वैभव में या राष्ट्रीय उत्पात में राष्ट्रीय निराशाओं में या राष्ट्रीय आशा आंकाक्षाओं में भी एक बने रहे है पर इनमें सबसे महत्व पूर्ण बात तो यह है कि एक समान पितृम् तथा एक समान पुण्यभू के इस प्रियतम पवित्रतम और सब से अधिक चिर कालिक दुहरे बन्धनों मै हिन्दू परस्पर के साथ बंध गए है और इसके अतिरिक्त ये दोनों बन्धन ये दोनों अिष्ठान अपनी भारत की भूमि अपना यह हिन्दूस्थान इसी एक मात्र देश में एक रूपता प्राप्त करते है इस कारण से हिन्दु जाति की एकता तथा एक जातीयता द्विगणित रूप से प्रमाणित होती है। एक देश एक वंश एक धर्म एक भाषा इनमे से जिन २ कसौटियों पर कसने पर कोई भी लोक समाज राष्ट्र बनने के लिये पात्र समझा जाता है वेसारी कसौटिया हिन्दू जाति का राष्ट्र के नाते का रहा हुआ अन्य किसी से भी अधिक प्रबल अधिकार डंके की चोट पर प्रस्थापि करती है।

हिन्दुस्थान का 'स्वराज्य' या स्वतन्त्र्य इन शब्दों का वास्तव में क्या अर्थ है ?

सामान्य संभाषण में स्वराज्य का अर्थ हमारे देश की या हमारे भूमि की राजनीतिक मुक्तता हिन्दुस्थान नाम से पुकारे जाने वाले भौगोलिक परिणाम की स्वाधीनता उसी प्रकार समझा जाता है। किन्तु अब ऐसा समय आ उपस्थित हुआ है कि जब हमें उपर्युक्त वाक्यों का पूर्णरुपेण पृथक्करण करके उनके अन्दर रहे हुए गूढ़ अर्थ को समुचित रुप से समझ लेना चाहिए। कोई भी देश या भौगोलिक परिणाम कुछ अपने आप ही राष्ट्र नही वन जाता। अपनादेश अपनी जाति का अपने लोंगो का अपने प्रियतम तथा निकट सम्बन्धी आप्त स्त्री लोगों का निवास स्थान होता है और इसी से वह हमारा प्यारा होता है दृष्टि से केवल अलंकारिक भाषा में ही हम उसका हमारा राष्ट्रीय अस्तित्व इन शब्दों केद्वारा निर्देश करते है अर्थात हिन्दुस्थान की स्वाधीनताइसका अर्थ भी हमारे लोंगो की हमारी जाति की हमारे राष्ट्र की स्वाधीनता इसी प्रकार होगा "हिन्दी स्वराज्य' अथवा "हिन्दी स्वाधीनता" इस शब्द का प्रयोग का अर्थ भी हिन्दू राष्ट्र के साथ उसका जहाँ तक सम्बन्ध है वहां तक तो भी हिन्दुओं को अपने पूरे विकास एवं उत्कर्ष के लिये समर्थ बनाने वाली वियुक्तता यही होगा।

मुसलमानो के द्वारा विचार--

साथ रहने में सन्देह जनक मित्र की अपेक्षा प्रकट शत्रु अधिक होता है। लखनऊ में जो प्रस्ताव लोग द्वारा स्वीकृत किये गये वे वास्तव में हम लोगों के लिये कुछ नई वात नही है। अब मुसलमानों की वे सब हिन्दू विरोधक हिन्दी विरोधक तथा वहिर्देशीय कार्य-

वाञ्छियां सुस्पष्ट कर दिखलाने के लिए केवल लखनऊ की बैठक में किये गये लीग के अधिकृत भाषाणों तथा प्रस्तावों की ओर अंगुली निर्देश कर देने से ही काम हो जावेगा। इनकी इच्छा है कि विशुद्ध उर्दू ही हिन्दी राज्य की राष्ट्र भाषा की पदवी प्राप्त करे २५ करोड़ हिन्दू उर्दू सीखें और अपनी राष्ट्र भाषा के रूप में उसको स्वीकारें। राष्ट्रीय लिपि के सम्बन्ध में भी उनका यही आग्रह है कि उर्दू लिपि ही राष्ट्र लिपि बनें इस सम्बन्धी में चाहे जो हो नागरी लिपि के साथ उन्हें कोई कर्त्तव्य नहीं। नागरी लिपि अधिक शास्त्र शुद्ध अधिक मुद्रणाक्षम भी क्यों न रही हो सीखने के लिये वह कितनी ही अधिक सहज भी क्यों न हों भारत वर्ष की २५ करोड़ जनता में वह पहिले ही से संचलित क्यों न रही हो और पहिले ही से वह उनकी समझ में क्यों न आ रही हो किन्तु फिर भी मुसलमान लोग उर्दू को अपनी सांस्कृतिक वपौती मानते हैं केवल इसी एक गुण के कारण उनका आग्रह है कि उर्दू लिपि ही राष्ट्र की लिपि और उर्दू भाषा ही राष्ट्र भाषा होनी चाहिए और उसके साथ ही साथ उन्हें वह स्थान प्राप्त हो इसलिए भारतवर्ष में रहने वाले हिन्दू तथा अन्य मुसलमानेतर जातियों की सांस्कृतियां पाताल में धंस जानी चाहिए। आजकल तो मुसलमानों को "वन्दे मातरम" यह राष्ट्रीय गीत भी असह्य सा हो उठा है बिचारे एकता की भिक्षा करने वाले हिन्दू। उन्होंने तुरन्त ही काट पीट कर उसे ओछा करने की त्वराकी पर आज्ञानुसार काटपीट करने के बाद भी

यह बात नहीं कि बचे हुए भाग को वह स्वीकार करेंगे मुंह ढककर भी न देवेंगे क्योंकि चाहे कितने ही उदार क्यों हो किन्तु रवीन्द्रबाबू अन्त में हिन्दू ही तो ठहरे उनकी दृष्टि में उहका समाधान तब तक नहीं हो सकता जब तक किसी इकबाल या स्वयं जिन्ना का ही शुद्ध उर्दू में रचित भारतवर्ष को पाकिस्तान या मुस्लिम अधि राज्यों के लिए समर्पित भूमिमान कर उसका जय जयकार करने वाला कोई गीत राष्ट्रगीत न माना जावे।

वास्तविक एकता तो जब मुसलमानों को उसकी आवश्यकता होगी तभी हो सकेंगी। मुसलमानों की इस कुचाल का कारण केवल यही है कि हिन्दुओं को ही हिन्दू मुस्लिम एकता रूपी पिशाच दीपिका के पीछे पड़ने की लगन लगी हुई है। जिस दिन हमने उनके मन में यह भ्रम पैदा कर दिया कि हिन्दूओं के साथ सहयोग करने का उपकार जब तक वे नहीं करते तब तक स्वराज्य का मिलना असंभव है उसी दिन से हमारे सम्मानीय समझौते को सर्वथा असम्भवनीय कर बैठेंगे। जब कभी किसी देश की कोई प्रचण्ड जनसंख्या वाली जाति मुसलमानों जैसी अल्पसंख्या वालों के सामने घुटने टेककर अभ्यर्थना पूर्वक सहायता की याचना करने लगती है और उसे यह विश्वास दिलाती है कि उसकी सहायता के अभाव में अपनी बहुसंख्या वाली जाति निश्चित रूप से मर मिट्टेगी तो उस दशा में यदि वह अल्पसंख्या वाली जाति अपनी उस सहायता को जहाँ तक हो सके अधिक से अधिक मूल्य में न बेचे और उस बहुसंख्या वाली जाति को उक्त निश्चित

रूप की मृत्यु के भवितव्य को शीघ्रतापूर्वक खींचकर और सन्निकट में लावे और इस प्रकार वह अपना राजनैतिक वर्चस्व उस देश में प्रस्थापित न करें तो वह एक महान आश्चर्य ही होगा। हिन्दूओं को उक्त धमकियों के विषय में मुंहतोड़ उत्तर में सुस्पष्ट रूप में कह डालें कि दोस्तो। कि हमें केवल इसी प्रकार की एकता की आवश्यकता थी और अब भी है। जिसके द्वारा ऐसे हिन्दी राज्य का निर्माण हो, जिसमें जाति, पंथ, वंश या धर्म का विचार न करते हुए सारे नागरिकों के साथ एक मनुष्य एक मत वाले तत्व पर सब समान रूप से व्यवहार किया जावेगा। इस देश में यद्यपि हम लोग बहुसंख्या वाले हैं तो भी हिन्दू जगत के लिये हम कोई विशेष अधिकार नहीं मांगते। इतना ही नहीं यदि मुसलमान भी यह अभिवचनदें कि अपने २ गृहों में अपने मार्गों-२ का अनुसरण करने के सम्बन्ध में भारत वर्ष की अन्य जातियों की रही हुई समान स्वाधीनता में वे किसी प्रकार का हस्तक्षेप न करेंगे तो हमें उन्हें भी इस प्रकार का आश्वासन देना स्वीकार है कि उनकी भाषा उनकी संस्कृति और उनके धर्म को विशेष संरक्षण दिया जावेगा। इधर कुछ दिनों से आक्रमणकारी तथा संरक्षक संधियों के द्वारा परस्पर के साथ बंधे हुए अरबस्तान से लेकर अफगानिस्तान तक मुसलमान राष्ट्रों द्वारा सर्वत्र इस्लामीकरण के आन्दोलन जो हिन्दू विरोधी आन्दोलन हो रहा है और धार्मिक तथा सांस्कृतिक द्वेष से प्रेरित होकर हिन्दूओं के कुचल देने की जो क्रूरता पूर्ण कुप्रवृत्ति पायी जा रही है उन्हें हम

भली भांति जान गये हैं भारतके अन्य सारे अंशोके स्तत्वों के साथ ही जिसमें हमारा स्तत्व भी सुरक्षित रहेगा इस प्रकार का स्वराज्य जीतने के लिए हम लोग सन्नद्ध हो गये हैं।

इग्लैण्ड के साथ जूझने के लिए हम इस हेतु से तैयार नही हुए हैं कि हमारा एक मालिक हटाया जाके उसके स्थान पर दूसरा मालिक आ डटे किन्तु इस हेतु से कि हमारे अपने घर के हम स्वयं ही मालिक बने यही हम सब हिन्दुओं का ध्येय है हमारे आत्म समीकरण या हिन्दुत्व का मू० देकर प्राप्त होने वाला स्वराज्य हत्या के समान ही प्रतीत होता है । जब मुसलमान इस बात को अच्छी तरह समझलेंगे कि हिन्दुओं की सहायता तथा सद् इच्छा के इस बिना हमारा काम नही चल सकता तब स्वयं वे ही एकता की मांगे करने के लिए नही अपितु अपनी ही भलाई के लिये ! मांग करेंगे प्रकार जो हिन्दू प्रस्थापित होगी वहां कुछ वास्तविक मूल्य तथा महत्व रखेगी आगे चलकर भी हिन्दुओं का हिन्दु मुस्लिम एकताके सम्बन्ध यही सूत्र वाक्य रहेगा कि "आओगे तो तुम्हारे साथ" न आओगे तो तुम्हारे बिना, और विरोध करोगे तो तुम्हारे विरुद्ध भी, जैसा बन पड़े हिन्दु राष्ट्र तो अपना भवितव्य निर्माण करेगा ही

भारत को मुसलमानेतर अन्य अल्पसंख्यक जातिया

भारत की अन्य अल्पसंख्यक जातियों के सम्बन्ध में हिन्दी राष्ट्र के दृढ़ीकरण के कार्य में कोई विशेष कठिनाईयां नहीं उपस्थित होने पायेगी पारसी लोग तो लगातार अंग्रेजी

अधिराज्य के विरुद्ध हिन्दूओं के कन्धे से मिलाकर ही काम करते आए है वे धर्मांध या सिर फिरे नहीं है। उन्होंने अपने हिन्दी देश भक्तों का हाथ खूब बटाया है हिन्दू राष्ट्र के सम्बन्ध में उन्होंने सद इच्छा के बिना किसी भी प्रकार की अवांछनीय वृत्ति प्रकट नहीं की है। सांस्कृतिक दृष्टि से भी वे हमारे सबसे अधिक निकट वर्ती आप्त है। हिन्दी अन्य ईसाइयों के सम्बन्ध में भी कुछ अल्प अंशों में यही कहा जा सकता है यद्यपि उन्होंने आज दिन तक चलाए गए राष्ट्रीय संघर्षों में बहुत कम हाथ बटाया है तो भी कम से कम ऐसा तो व्यवहार नहीं किया है जिससे वे हमारे गले भार स्वरुप बन बैठे वे कुछ कम धमन्धि और राजनैतिक तर्क बुद्धि के सम्मुख सिर झुकाने वाले हैं। हमारे यह मारे अल्प संख्या वाले स्वदेश बान्धव हिन्दी राज्य में विश्वास पात्र तथा देशाभिमान प्रेरित नागरिक ही बनेंगे। एङ्गलो इण्डियनों के सम्बन्ध में यह स्पष्ट हैं कि उनकी इस समय दिखाई देने वाली धृष्टता तथा प्रचलित राज्य सुधार विधानानुसार मताधिकार में उन्हें मिला सिंह का हिस्सा इग्लैण्ड के वर्च के समाप्त होते ही पल भर में समाप्त हो जायेगी जन्म जात राजनैतिक शुद्ध बुद्ध शिघ्र ही उन्हें अन्य हिन्दी नागरिकों की पांत भेला रखेगी। यदि इस पीढ़ी में नहीं तो हमारे बचों की अगली पीढ़ी में अपनी इस हिन्दू महासभा का भाग्यशाली अध्यक्ष उस समय के उस भावी अधिवेशन के मंच से यह घोषित करने में समर्थ होगा कि हूण तथा ग्रीक और शक आदि आक्रमणकारियों की जो गतकाल

में जो गति हुई थी उसी प्रकार अब उस देश में बृटिश वर्चस्व का भी कोई चिन्ह नही रह गया हैं। हिन्दू जगत का ध्वज अति उच्च हिमाचल के उत्तुंग शिखिरों पर ऊँचा उठाकर फहरा रहा है और अब हिन्दुस्थान पुनः स्वाधीन तथा हिन्दू जगत विजयशाली बन गया है। नागपुर अधिवेशन १९३८

हिन्दू राष्ट्र जीवन तत्वों बढ़ा हैं कागज की सन्धि से नही

कम से कम ५ हजार वर्ष पूर्व हमारे पूर्वज वैदिक काल में ही हमारे देश के लोगों को धार्मिक जातीय सांस्कृतिक और राजनैतिक जीवन तत्वों से संगठित कर एक राष्ट्र बना रहे थे जो आज हिन्दू राष्ट्र के नाम से समस्त भारत में फैला हुआ हैं और सब लोग भारत वर्ष को अपनी पितृ भूमि और पुण्य भूमि मानते है। कोई भी देश उतने अधिक समय की राष्ट्रीय जीवन की अविच्छिन्न रुप से बड़ा है। हिन्दू राष्ट्र सन्धि करके नही बनाया गया है। यह कोई कागज के टुकड़े से नही बनाया गया है यह शान्त बैठे रहने को राष्ट्र नही बनाया गया था। यह कोई विदेशियों का नया राष्ट्र नही बनाया गया है। यह उसी देश की भूमि मे बढ़ा है और इसकी जड़े बहुत गहरी दूर २ तक फैली गई है। यह मुसलमानों को या संसार में किसी भी व्यक्ति को चिढ़ाने के लिये कपोल कल्पित कथा नही है। बल्कि यह हिमालय की भांति विशाल ठोस सत्य है। इसकी चिन्ता नही है

कि इसमें कितने ही सम्प्रदाय हैं और कितने हीं विभाग है इसके अन्दर कितने विरूपता और विभिन्नता से युक्त है। किसी भी राष्ट्र को इसलिए राष्ट्र नहीं कहा जा सकता कि उसमें विभाग या विभिन्नता नहीं है किन्तु उनमें परस्पर सजातीयता और सहधर्मता अन्य राष्ट्रीं की अपेक्षा अधिक होती है।

भारतीय राष्ट्र की कल्पना का उदय

हमने हिन्दू राष्ट्र को सजीव तत्वों से वृद्धि और उसके विकास का इतिहास मरहठा साम्राज्य के पतन अर्थात १८१८ तक का बताया है अंग्रेजों ने देखा कि भारत को विजय करने में उन्हें जितने युद्ध करने पड़े वे सब हिन्दू राजाओं से ही करने पड़े इस लिए ब्रिटिश लोगों की सबसे पहिली यह चिन्ता थी कि हिन्दू राष्ट्र को किस प्रकार नष्ट करें अंग्रेजों ने पहिले भारत में ईसाई पादरियों को राजनैतिक सहायता देकर हिन्दुओं को ईसाइ बनाने का यत्न किया। परन्तु १८५७ के गदर ने उनकी आंखे खोल दी कि हिन्दू और मुसलमानों के धर्म पर खुले रूप से हमला करने करने में क्या भय है इसलिये उन्होंने ईसाई पदारियों को खुले रूप से सहायता करमे का काम बन्द कर दिया। उसके बाद उन्होंने हिन्दू राष्ट्र को समूल नष्ट करने की एक दूसरी नीति सोची कि हिन्दू युवकों में पाश्चात्य शिक्षा जो राष्ट्रीयता का नाश करने वाली थी जारी कर दी उन्हें हिन्दू धर्म हिन्दू संस्कृति और हिन्दू इतिहास का कुछ भी ज्ञान न रहा इसके विपरीत मुस्लिम

पाश्चात्य शिक्षा से एक हाथ पीछे रहे और परिणाम स्वरूप उनकी साम्प्रदायिक दृढ़ता नष्ट नही हो सकी। उन्हे मालूम था कि भारत में उनके राजनीतिक प्रभुत्व को किसी से यदि भय हो सकता है तो केवल हिन्दू जाति के राष्ट्रीय जाग्रति उत्पन्न होने तथा भारत में हिन्दू पद पाद शाही स्थापित करने की भावना से ही सकता है सन १८५७ के गदर में हार जाने के बाद भी पंजाब में राम सिंह कोका ने महा राष्ट्र में बासुदेव बलबन्त फड़के ने अंग्रेजों को देश से निकाल कर पुनः हिन्दू साम्राज्य प्राप्त करने के लिये सशस्त्र क्रान्ति की थी। जिससे अंग्रेजों का सन्देह भी दृढ़ हो गया था कांग्रेसगत ५० वर्षो से मुसलमानों को संयुक्त भारत में मिलाने का यत्न कर रही है परन्तु फिर भी वह असफल क्यों रही इसके मुख्य कारण क्या है मोरुला विद्रोह के होता अली मुसलियर ने युद्ध में निर्दयता पूर्वक हजारों स्त्री पुरुष और बच्चों को जबरदस्ती मुसलमाक बनाया और जिन लोगों ने मुसलमान बनने से इनकार किया इन्हें उसने तलवार के घाट उतार दिया। अपने इस कृत्य का औचित्य बताते हुए उसने कहा था कि हिन्दू मुसलमानों की स्थायी एकता इसकें सिबाय दूसरे किसी रूप से नही हो सकती कि समस्त हिन्दू मुसलमान बना दिये जाये जो हिन्दू ऐसा करने से इनकार करते है वे हिन्दू मुस्लिम एकता के शत्रु हैं अतएव देश द्रोही है औ कत्ल करने के योग्य है राष्ट निर्माण करने के लिये प्रादेशिक एकता नही चाहिए किन्तु धार्मिक सांस्कृतिक और जातीय एकता की आवश्यकता है भारतीय राष्टीय कांग्रेस इस

तत्वों को नहीं समझ सकी और यही कारण है कि वह इह सम्बन्ध में अपने मनोरथ में विफल रही।

क्या भारतीत मुसलमानों की यह इच्छा है कि हिन्दूओं के साथ एक होकर रहे ?

वास्तविक बात तो यह है कि समस्त मुस्लिम जाति ही साम्प्रदायिक भावना से परिपूर्ण है और उसमें कांग्रेस वादी मुसलमान भी सम्मिलित है।कांग्रेसी हिन्दू इस उपरोक्त प्रश्न पर आरम्भ से ही विचार करना नहीं चाहते। उन्हें भय है कि यदि वे इस प्रश्न पर विचार करेंगे तो उन्हें अपनी प्रादेशिक राष्ट्रीयता की धुन के भूत को धर्मान्धता, मूर्खता कहकर छोड़ना पड़ेगा मुसलमानों के लिए यह धर्मान्धता या मूर्खता एक ठोस तत्व है। उनके लिए यह बिल्कुल मनुष्योचित बात है कि प्रादेशिक राष्ट्रीयता के प्रति अपनी उदासीनता प्रकट करें । यह बात कांग्रेस–वादियों को प्रकट हो गयी है कांग्रेस वादी मुसलमानों के इतिहास, तत्व ज्ञान और उनकी राजनैतिक मनोवृत्ति से बिल्कुल अज्ञान जान पड़ते हैं। वास्तव में हम हिन्दुओं का काम केवल इतना ही है कि हम निश्चय कर लें कि न तो हम ब्रिटिश सरकार के गुलाम बनेंगे और न मुसलमानों के। हम अपने घर में हिन्दुओं की भूमि हिन्दुस्थान के स्वयं मालिक बनेंगे।

हमारा तुरन्त क्या कार्यक्रम होना चाहिए ?

भारतीय मुसलमान भारत में समान रूप और समान दर्जे से प्रादेशिक नाते से एक राष्ट्र बनाने या राजनैतिक एकता बनाने

में कभी साथ नही देते इसलिए हम हिन्दू संगठन वादियों का कर्त्तव्य है कि अपनी पहली मूल को सुधारकर लें। हमारा पहिला राजनैतिक अपराध जो हमारे कांग्रेसवादी हिन्दुओं ने अजान से कर डाला और जिसे वे आज भी करते चले आ रहे हैं वह यह है कि वे प्रादेशिक राष्ट्र की मृग तृष्णा के पीछे दौड़े चले जा रहे हैं और अपनी इस व्यर्थ की दौड़ में वे उस सजीव हिन्दू राष्ट्र को मार डालना चाहते हैं। हम हिन्दुओं को चाहिए कि जहां से मरहठा और सिख हिन्दू साम्राज्य का पतन हुआ है वहां से हम राष्ट्रीय जीवन का सूत्र ग्रहण करें। योग्य आहार के अभाव में हिन्दू राष्ट्र को अचानक आघात पहुँचा और उसे आत्म विस्मृति को हटाकर उसने फिर से नव जीवन फ़ूंकना है। हमें बड़ी दृढ़ता पूर्वक विधोपित कर देना चाहिये कि सिन्धु नदी से हिन्द महासागर तक सारा देश हिन्दुओं का है और हम हिन्दुओं का एक राष्ट्र है वही इसके मालिक है। हम हिन्दू होने के नाते भारतीय भी हैं और भारतीय होने के कारण हिन्दू है।

परन्तु करेंगे कैसे

यह सब होगा कैसे ? इस नीति व्यवहार में कैसे लाया जाये ? इसका एक ही उत्तर है। आप निराश न हों। अभी एक बड़ा शक्तिशाली अस्त्र हमारे समीप ही हैं।

कांग्रेस का बहिष्कार करो

कांग्रेस के टिकट वाले उम्मीदवार को अपना वोट न देकर केवल हिन्दू राष्ट्रवादियों को ही अपना वोट दें यह यों तो अपने को हिन्दू समझना अपने गौरव के विरुद्ध समझाते हैं, परन्तु विधान के अनुसार प्रत्येक उम्मीद वार को अपना धर्म और जाति लिखनी होती हैं और ये कांग्रेस के उम्मीदवार उस समय राष्ट्रीयता भूल कर चुप चाप अपनी जाति, धर्म आदि लिख देते है और अपनी जाति वालों से कहते है कि हमें ही वोट दीजिये। यदि आप इन कांग्रेसियों को स्पष्ट बता दें कि आप एसे दुफसला हिन्दुओं को अपना मत नहीं देंगे तो इनमें से ७५ फीसवी राष्ट्रीवादी चुपचाप हिन्दू महासभा के प्रतिज्ञा पत्र की शपथ ले लेगे किन्तु धारा सभा के सदस्य अथवा मंत्री होने का अवसर नहीं जाने देंगे। कांग्रेस के इस हिन्दू विरोधी भाव का मुकावला हिन्दू राष्ट्रीय दल की स्थापना से हो सकता है। देश के समस्त सनातनी आर्य समाजी हिन्दू संगठनवादी और साधु सन्यासी संगठन करके यह निश्चय कर लें कि हम कांग्रेस के टिकट वाले उम्मीदवार को अपना वोट नहीं देंगे तो आगामी चुनाव में हिन्दू महा का बहुमत हो जायेगा। यदि यह संभव न भी हो तो भी आप अल्प संख्या में ही चुने जाये ओर सरकार को अपनी मन मानी न करने देश में हिन्दू राष्ट्र का फिर उदय होगा ओर प्रत्येक हिन्दू अपना सीना आगे करके चलेगा। जो राजनीतिक सत्तायें हैं उन्हें प्राप्त कर लो। हिन्दू राष्ट्र का झंडा ऊंचा करो यह देखो कि भारत सदा हिन्दुस्तान बना रहे पाकिस्तान या रेगिस्तान न बनने पायें।

निजाम हैदराबाद का सत्याग्रह आन्दोलन

कलकत्ता सन् १९३९ ई०

इस वर्ष की इन समस्त घटनाओं में हिन्दू संगठन की दृष्टि से तथा उस दृष्टि से जो हमें अपनी भावी नीति और कार्यक्रम के लिए सन्देश देती है वह मुख्य घटना हैदराबाद का सत्याग्रह है जिसे हमने निजाम सरकार की हिन्दू विरोधी नीति के विरुद्ध इस वर्ष ६ मास तक जारी रखा था यह यथार्थ में धर्म युद्ध था जितना यह धार्मिक था उतना ही वीरता पूर्ण भी था इस युद्ध का का ताम हमारे आर्य समाजी भाईयों ने सहन किया १० हजार से अधिक आर्य बन्धुओं ने इस युद्ध में भाग लिया और ऐसा वीरतापूर्ण युद्ध किया कि उन्होंने यह प्रकट कर दिया है कि इस युग के सर्व श्रेष्ठ हिन्दू सगठन करने वाले यह महर्षि स्वामी दयानन्द ने यज्ञ की जो अग्नि प्रज्वलित की थी वह दिन प्रतिदिन प्रज्वलित होकर बढ़ रही है और उनके जीवन का उद्देश्य अयोग्य व्यक्तियों के हाथमें नहीं पड़ा है। हिन्दू महा सभा की ओर से कम से कम ५ हजार हिन्दूओं ने हिन्दू विरोधी निषेध आज्ञा की अवज्ञा कर सत्याग्रह किया और अदम्य उत्साह से प्रशंसनीय रुप से सत्याग्रह संग्राम को जारी रखा।परन्तु उससे भी अधिक हिन्दू विस्तार की दृष्टि से जो उत्साह जनक बात हुई है वह यह कि केवल हिन्दू महा और आर्य समाजही इस सत्याग्रह में सम्मिलित नहीं हुए । यद्यपि ये प्रधान रुप से सम्मिलित अवश्य थे किन्तु इस सत्याग्रह आन्दोलन में व्यापक रुप से समस्त हिन्दू भाईयों ने हृदय से हिन्दू ध्वजा के

नीचे ऐसे चाव से भाग लिया था कि यदि इस हिन्दू विस्तार भावना के सहयोग, सहानुभूति और बलिदान से यह आन्दोलन समस्त भारत में न होता तो हम इसे इतनी सफलता के साथ समाप्त नही कर सकते थे। इस धर्म युद्ध में हिन्दू उद्देश्य के लिये यह बात अब सिद्ध हो गई है कि हिन्दुओं में जाति, मतमतान्तर के होते हुए भी हिन्दुत्व अभी तक व्यापक राष्ट्रीय भावना के साथ हमारी नसों में व्याप्त है। हैदराबाद सत्याग्रह को कांग्रेस ने उसे साम्प्रदायिक कहकर विरोध किया।

दिल्ली का शिव मंदिर

दिल्ली के शिव मंदिर के लिए हिन्दुओं ने जिस अद्भुत रूप से सत्याग्रह जारी रखा है उसके प्रति भी अखिल भारतवर्ष को श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहिए। इससे भी नहीं चेतावनी मिलती है कि हिन्दू विरोधी आक्रमण के विरुद्ध कांग्रेस न तो हिन्दू हितों की रक्षा करती है न करेगी और न वह कर ही सकती है। इस आन्दोलन से हिन्दुत्व की जो भावना जाग्रत हुई है। वह सच्चे शिव के रूप में प्रमाणित होगी।

हमारी राष्ट्र भाषा

संस्कृत निष्ठ हिन्दी जो संस्कृत से बनायी गई है और जिस का पोषण संस्कृत भाषा से हो वह हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा होगी। संस्कृत भाषा संसार की समस्त प्राचीन भाषाओं में सबसे अधिक संस्कृत और सबसे अधिक सम्पन्न होने के अतिरिक्त हम

हिन्दुओं के लिए सबसे अधिक पवित्र भी है। हमारे धर्म ग्रन्थ इतिहास,तत्वज्ञान और संस्कृति संस्कृत भाषा से इतनी अधिक परस्पर मिली हुई है और उनके अन्तर्गत है कि यही हमारी हिन्दू जाति का वास्तविक मस्तिष्क है प्रत्येक हिन्दू युवक के प्राचीन भाषा के पाठ्यक्रम में संस्कृत भाषा आवश्यक रूप से रहनी चाहिए मौ०अब्दुल कलाम आजाद कहते हैं कि राष्ट्रीय भाषा हिन्दुस्तानी ऐसी हो जो उर्दू के समान हो परन्तु पं० जवाहर लाल नेहरू आगे बढ़कर कहते हैं कि राष्ट्र भाषा अलीगढ़ स्कूल की या उस्मानिया यूनिवर्सिटी कि हो देश गौरव श्री सुभाष बाबू अपने पूर्वाधिकारी पंडित नेहरू सेभी बुद्धिमत्ता में बाजी मार ले गये हैं। कहते हैं कि भारत के लिए सबसे उपयुक्त राष्ट्र लिपि रोमन लिपि होगी। इस प्रकार से कांग्रेस की विचार धारा राष्ट्रीय बातों का विचार करती है। इस लिपि में वन्देमातरम् इस प्रकार लिखा जावेगा।

"रोमरो प्रत्तिमा घड़िवे मंडिरे मंडिरे" और फिर गीता किस बढ़िया रूप से लिखी जावेगी। ढर्म क्षेट्रें कुरु क्षेट्रें समवेटा युयुटस्वह हम हिन्दुओं को तो योरोप और अरबिया के लोगों को भी नागरी लिपि और हिन्दी भाषा स्वीकार करने के लिए कहना चाहिए हमारा यह प्रस्ताव उन हठी और आशावादी लोगों को कुछ भी अक्रियात्मक नहीं समझना चाहिए जो उर्दू को राष्ट्र भाषा बनाने की कल्पना कर सकते हैं कि मरहठे उर्दू पढ़ेंगे और आर्य समाज के गुरुकुलों में वेदों को रोमन लिपि में पढ़ाया.जायेगा।

कांग्रेस मंत्रिमंडल द्वारा हिन्दुओं पर अन्याय

बाराबंकी में हिन्दुओं को अपने मंदिरों में आरती करने और शंख बजाने से रोक दियागया है। कितने ही स्थानों में होली पर हिन्दुओं को हिन्दुओं पर भी रंग फैंकने की मनादी कर दी गयी है। जौनपुर में मजिस्ट्रेट पर मुसलमानों ने आक्रमण किया था परन्तु मुस्लिम लीग के सेक्रेटरी की सिफारिश पर अभियुक्त को मुक्त कर दिया गया। कांग्रेसी सरकार ने मुसलमानों को उनकी जनसंख्या के अनुपात से कहीं अधिक नौकरियों में प्रतिनिधित्व दिया है युक्त प्रान्त में मुसलमानों की जनसख्या का अनुपात १४ प्रतिशत है। परन्तु वहां की कांग्रेस सरकार ने ४ कलेक्टरों में से ३ कलक्टर मुसलमान नियुक्त किये है। १३ डिप्टी कलेक्टर में से ८ डिप्टी कलेक्टर मुसलमान नियुक्त हैं। युक्त प्रान्त की सरकार ने जो यह विज्ञप्ति प्रकाशित की है उसे प्रत्येक हिन्दू को अवश्य पढ़ना चाहिए। यह विज्ञप्ति काग्रेस ने गुप्त रूप से केवल मुसलमानों के पास ही भेजी थी।

आगामी दो वर्ष का कार्यक्रम

समस्त हिन्दू सभायें चाहें वे स्थानीय हो या प्रान्तीय निम्नलिखित तीन कार्यों को पूरा करने का भरसक प्रयत्न करें।

१– अस्पृश्यता को मिटा दो।

२– समस्त यूनिवर्सिटियों कालेजों और स्कूलों में सैनिक शिक्षा अनिवार्य करने पर जोर डालो और अपने युवकों को नौ

सेना वायुयान सेना तथा स्थल सेना में प्रविष्ट कर दो।

३– जहां तक हो सके वहां तक प्रत्येक हिन्दू मतदाता को इसके लिए तैयार कर लो कि जब चुनाव हो तो वे हिन्दू संगठन वादी उम्मीदवारों को ही अपना मत दें। जो हिन्दू हितों की रक्षा करने की प्रतिज्ञा करके जाते हैं और उन कांग्रेसवादियों को अपना मत कभी न दो।

मदुरा अधिवेशन १९४७

हिन्दुओं का लक्ष्य युद्ध के प्रति रुख तथा जाति को सैनिक बनाने के लिए तथा देश के औद्योगीकरण, की आवश्यकता के आधीन होना चाहिए। यदि हिन्दू फौज, नौ सेना, वायुयान, युद्ध सामिग्री तैयार करने वाले कारखानों में भर्ती होने से इन्कार करेंगे तो इसका एक मात्र तात्कालिक फल यही होगा कि मुस्लिम जीने पर चढ़ बैठेंगे कोई लीग संधि हिन्दू महासभा को एक रजामन्द दल बनाये बिना हिन्दू अधिकारों की बेच नहीं सकती और न उन्हें रहन रख सकती है।

पाकिस्तान की माँग

मैं उस स्पष्ट रुख की सच्चे दिल से प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता जो कि मि० एमरी ने भारतीय स्वतन्त्रता तथा उनके अविभाजन के बारे में धारण किया है तथा जिस दृढ़ता से वायसराय ने लीग की कितनी ही हिन्दी विरोधी माँगों को युद्ध कमेटी तथा एक्जेक्टिव कौंसिल के विस्तार के सम्बन्ध में ठुकरा दिया है।

ब्रिटेन की तानाशाही

ब्रिटेन भारत को जनतन्त्रात्मक और स्वतन्त्र विधान देकर ऐसा कर सकता था लेकिन उसने ऐसा कुछ नहीं किया। जहां तक ब्रिटिश राष्ट्र का अपना हित है वह वैयक्तिक स्वतन्त्रता और प्रजातन्त्र का राग अ ाा र रहा है और उसके साथ बहुत प्रेम रखता है। लेकिन युद्ध की अवस्था में क्या उसने एक ही दिन में अपने जनतन्त्र विचारों को विधान को तिलांजलि नहीं दे दी और ठोस तानाशाही के पक्ष में वोट दिया ? क्रियात्मक राजनीति भी यह मांग करती है कि हम उनसे मित्रता करें जो हमारे देश के हितों के सेवक हों भले ही वह किसी 'वाद' का अनुसरण करते हों ! और उनके साथ तब तक मित्रता रखें जब तक वे हमारे हितकारी हों।

युद्ध प्रयत्नों में

हिन्दू युद्ध के अवसर से लाभ उठावें और अपने आपको औद्योगीकरण तथा फौजकरण के कार्यों में लगा दें। हमें सरकार की उन रियायतों से लाभ उठाना चाहिए जो वह विवश होकर हमें प्रस्तुत कर रही है। हम भी अंग्रेजों की सहायता देने के विचार से युद्ध प्रयत्नों में सम्मिलित नहीं हो रहे बल्कि अपनी भलाई के लिए ही ऐसा कर रहे हैं

सत्याग्रह आन्दोलन और सशस्त्र विद्रोह

नारे लगाना और जेल जाना खेल बना रखा है। यह देश के लिए लाभ दायक नही हो सकता। हाँ, आगामी चुनाव का एक हथकण्डा हो सकता है।

हिन्दू महासभा की मांगें

भारत को युद्ध के पश्चात कामनवेल्थ का एक अंश मानने की भारत मंत्री और वायसराय ने घोषणा कर दी है। हमने भारत के बंटबारे के आन्दोल न का विरोध किया और मांग की कि इसे न माना जाये।

घृणास्पद प्रतिबन्ध

मुझे आशा है कि यदि हिन्दुस्थान के विभिन्न भागों से हिन्दू संगठनवादी बड़ी संख्या में एकत्रित हुए और जेल लाठी चार्ज और दूसरे हर प्रकार के लिए तैयार रहे तो महा सभा का यह २३वां अधिवेशन सबसे अधिक सफल होगा यह भाषण भागलपुर में नहीं पढ़ा जायेगा। हिन्दू आन्दोलन के पथ प्रदर्शन के लिए मैं कुछ बातें लिखता हूँ।

नेपाल के महाराजा के प्रति

नैपाल ही एक मात्र हिन्दू राज्य है और वह अतीत से भी अधिक भव्य हिन्दू भविष्य की आशा हैं। हिन्दू वास्तव में एक राष्ट्रीय इकाई है और उनके भाग्य को परिवर्तित करने की शक्ति नैपाल के हाथ में है। नैपाल में मसजिदों की संख्या बढ़ रही है और आस पास के क्षेत्रों से लड़कों लड़कियों को बहकाकर उन्हें मुसलमान बनाया जाता है। नैपाल सरकार राज्य में हिन्दुओं के संकट को छोटा न समझ कर सजग रहे भारत के अन्य भागों की भांति ये मसजिदें पहले प्रार्थना गृहों के रूप में बनायी जाती हैं, फिर हिन्दू विरोधी कट्टरपन की तप्त भूमि का कार्य करने लगती है।

मुस्लिमों का प्रतिनिधित्व

अब समय आ गया है कि हमारे देश के मुसलमान वास्तविकता का अनुभव करें। इसमें इनका ही हित है इन्हें यह भाषित होना चाहिए कि देश में इनका अल्पमत है और इस बात का कोई अवसर ही नहीं कि वे हिन्दुओं के बहुमत को अल्पमत में परिवर्तन कर दें। हिन्दुस्थान में मुसलमानों को सदैव अल्पमत में रहना है इसलिए वे अपना राजनैतिक कार्यक्रम भी इसी वास्तविकता को सामने रखकर बनायें। यदि वे आशा लगाये बैठे हों कि पंजाब और दूसरे प्रान्तों को पाकिस्तान में सम्मिलित कर दिया जाय तोउन्हें यह भी सुन लेना चाहिऐ कि हिन्दू अफगानिस्तान को हिन्दुस्थान में सम्मिलित करने का अधिकार रखते हैं जिससे हिन्दू जगत की सीमा ठीक हिन्दू कुश तक पहुंच जावे।

चुनाव की लड़ाई में हिन्दुत्व भाव

जब तक देश में साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व का ढग चलता रहेगा हिन्दुओं के हित वहां सुरक्षित नहीं रह सकते। हिन्दु महासभा जनगणना के अनुपात से प्रतिनिधित्व योग्यता के अनुसार पब्लिक नौकरियों का वंटवारा, पूजा भाषा लिपि आदि की स्वतन्त्रता के लिए अधिकारों को प्राप्त करे। हिन्दू महा सभा का दावा है कि हिन्दुस्थान के राष्ट्रीय हित और हिन्दुओं के हित में कोई भेद नहीं हो सकता। कांग्रेस व दूसरी संस्थाओं ने इस सच्ची राष्ट्रीयता के सिद्धान्त को तोड़ने का वादा किया है। उन्होंने सामने आदर्श रख लिया है कि देश भक्ति की मौलिक आवश्यकताओं के लिए हिन्दुओं के अधिकारों के पीठ में छुरी भौंकी जाय। अपने आपको को साम्प्रदायिकता से अलग प्रकट करने के लिए इन संस्थाओं के हिन्दु नेता और कार्यकर्ता अपने आपको हिन्दू कहने में लज्जा अनुभव करते हैं लेकिन साम्प्रदायिकता पूर्ण चुनाव में भाग लेकर सदस्य बनने में उन्हें कोई लज्जा नहीं आती।

हिन्दुओं को युद्धप्रिय बनाने का कार्यक्रम

हिन्दुओं को युद्धप्रिय बनाने का कार्यक्रम जारी रखा जाय क्योंकि युद्ध द्वार तक आ पहुंचा है अतः अधिक संख्या में सेना में भर्ती हो।

कानपुर अधिवेशन १९०२ ई०

हिन्दू महासभा की प्रगति और जागरुकता

वह हिन्दुत्व पक्षपातिनी भावना जिसे पुनरुज्जीवित करने में हिन्दू सभा वर्षों से प्रयत्नशील रही है वह वर्षों से उपेक्षित होने पर भी हिन्दू विरोधी शक्तियों का न केवल सामना कर सकती है अपितु उन्हें नीचा दिखाने का

अदम्य तेज भी इसमें विद्यमान है। वर्षों से यह दृढ़ धारणा थी कि कॉंग्रेस हिन्दुओं का और मुसलिम लीग मुसलमानों का तथा दोनों मिलकर भारतीय राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करती हैं परन्तु ब्रिटिश सरकार को भी इस भारत की तीन शक्तिशाली अखिल भारतीय संस्थाओं में हिन्दू राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करने वाली प्रमुख संस्था मानने के लिए वाध्य होना पड़ा।

कांग्रेस मुस्लिम दवाव के सन्मुख निरंतर झुकती गयी और यहां तक कि इसने यह वचन भी दे दिया कि यदि मुसलमान हठ ही करेंगे तो प्रान्तों के पृथक्करण का विरोध नही करेगी।

अगस्त आन्दोलन

अचानक म० गाँधी समेत हजारों देश भक्त कांग्रेस नेता गिरफ्तार कर लिए गये सरकार ने उसका दमन किया फलस्वरूप अशान्त वातावरण पैदा हो गया है। आज हमारे हजारों हिन्दू भाई काँग्रेसी और गैर कांग्रेसी मृत्यु से लेकर नजरबंदी की असीम यातना भोग रहे हैं। वे हमारे भाई हैं। देश भक्ति की भावना से प्रेरित होकर उन्होंने जो कष्ट सहे हैं उनके लिए हम कृतज्ञता पूर्वक उनकी प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकते। पर इस प्रकार के संतोष में जो गुण्डापन हुआ है उसके साथ हमारी सहानुभूति नहीं है।

पाकिस्तानी योजना का विरोध

१- हिन्दू अधिक संख्या में सेना में भर्ती हों। २- वायसराय की कार्य कारिणी आदि अपने हाथों में ले लें। ३- अपना संगठन करें ४- अपने अधिकारों के लिए एक जुट संघर्ष करें ५- सभी जगह हिन्दू महासभा की शाखाओं की स्थापना करें। ६- अस्पृश्यता को समाप्त करें।

स्वातन्त्र्यवीर सावरकर

वीरसावरकरप्रशस्तिः

१ स्तवकः

रुद्र प्रार्थना

[१]

त्रिशूलकोटी-त्रपिताधंचन्द्रः
पिनाकटङ्कार-धमद्भुजङ्गः
भालानलक्षीण-शिरस्थगङ्गः
चण्डीद्वितीयोऽवतु वः सः रुद्रः ॥

सलज्ज अर्धेन्दु त्रिशूल से हैं,
पिनाक से खिन्न भुजङ्ग धारे।
शिराग्नि से पीड़ित गंगशोभी
सचण्डिका रुद्र रहें तुम्हारे ॥

त्रिशूल के मध्यभाग से अर्द्ध चन्द्र को लज्जित करने वाले, धनुष की टंकार से भुजंग को चोंकाने वाले, अपने तृतीय नेत्र की ज्वाला से शिर पर स्थित गंगा को क्षीण करने वाले चंडीपति भगवान रुद्र आपकी रक्षा करें।

वीर विष्णु

[२]

सुदर्शनोद्भासिततर्जनीकः
शार्ङ्गाग्रकोटि-स्फुरितोन्नतांसः
कौमोदकीदण्डनिबद्धमुष्टिः
सनन्दकः पातु स वीरविष्णुः ॥

सुदर्शनोद्भासित तर्जनी है
उहंग पे सारंग विघ्नहारी।
गदा तथा नन्दक ले करों में
हरा करें त्रास सदा मुरारी ॥

जिनकी तर्जनी पर सुदर्शन चक्र सुशोभित है, शार्ङ्ग धनुष जिनके उन्नत कंधे पर विराजमान है, कौमोदकी गदा को जिन्होंने मुट्ठी में धारण कर रखा हैं ऐसे नन्दक खड्ग धारी वीरविष्णु आपकी रक्षा करें।

[३]

रामवाणाः जयन्तु	रामवाण जयी हों
सद्धर्मसंरक्षणमात्रहेतोः	नदीश पै सुदृढ़ सेतु बाँधा,
संसार संतारणवज्रसेतोः।	सुधर्म के रक्षण में मही के।
अवन्ध्यपाताः रिपुमर्मवेधे	सदा जिन्होने रिपुमर्म भेदे,
जयन्तु वाणाः रघुवंशकेतोः ॥	जयी रहें सायक राम जी के ॥

सद्धर्म की रक्षा ही जिनका एकमात्र हेतु है, संसार सागर से तारने के लिए जो वज्रसेतु हैं ऐसे रघुवंश के केतु भगवान राम के, शत्रुओं के मर्म भेदन में अविफल वाण विजयी होवें।

[४]

नृसिंहनखाः जयन्तु	नृसिंह के नख जयी हों
नारायणासक्तसुतारिभूतं	अनन्त के भक्त सुतारिधर्मी,
हिरण्यपूर्वं कशिपुं मदान्धम्।	अयाक्ष के भ्रात भले कई हों।
उरोविदारं प्रविदारयन्तोः	उरोविदारी इन राक्षसों के,
नृसिंहमूर्तेर्नखराः जयन्तु ॥	नृसिंह के पाणिज ही जयी हों ॥

नारायण की भक्ति में आसक्त अपने पुत्र प्रह्लाद के शत्रु, मदान्ध हिरण्यकश्यप का हृदय विदारण करने वाले नृसिंह भगवान् के तीक्ष्ण नखों की जय हो।

[५]

शराग्नयः जयन्तु

घोरासुराणां हि पुरत्रयं तन्
मध्ये-समुद्रं दृढ़रक्षितं यत् ।
विनिर्दहन्तः कणशः क्षणेन
जयन्तु शम्भोः शरवह्नयस्ते ॥

शराग्नियों की जय हो

समुद्र में रक्षित राक्षसों की
अनी यदा भू पर भार होवे ।
प्रदाह में सक्षम शम्भु जी की
शराग्नियों की जयकार होवे ॥

समुद्र के मध्य में भयंकर राक्षसों द्वारा सुरक्षित तीन पुरों को क्षणमात्र में कण कण जलाने वाले भगवान शंकर की शराग्नि की सदा जय हो ।

[६]

भीमगदा जयतु

पतिव्रताया अपि वस्त्रशून्यं
निजोरुभागं प्रतिदर्शयन्तम्
दुर्योधनं तं निधनं नयन्ती
जयत्वसौ भीमगदा प्रचण्डा ॥

भीमगदा की जय हो

पतिव्रता है पर वस्त्रशून्या
उरूपमा वीरव्रता अखण्डा ।
महाबली कौरवराज हन्त्री
जयी रहे भीमगदा प्रचण्डा ॥

पतिव्रता दोपदी को अपनी वस्त्रशून्य जंघा दिखाने वाले दुर्योधन का निधन करने वाली भीमसेन की प्रचण्ड गदा की जय हो ।

शिवभवानी जीयात्

[७]

दुर्भाग्यरेखा रिपुराजलक्ष्म्याः
सौभाग्यलेखा खलु हिन्दुभूम्याः
म्लेच्छद्विषच्छोणितशोणवर्णा
जीयाच्छिवच्छत्रपतेर्भवानी ।।

दुर्भाग्यरेखा रिपुराज्यश्री की
सौभाग्यलेखा शुचि हिन्दुता की ।
म्लेच्छादि के शोणित से लसी हो
दुर्धर्षिणी सर्वजिता शिवा की ।।

म्लेच्छों की राजलक्ष्मी-विनाशक दुर्भाग्यरेखा, तथा हिन्दुभूमि की सौभाग्यलेखारूप; शत्रु के शोणित से लाल रंग वाली छत्रपति शिवा जी की भवानी (तलवार) विजयी हो ।

२ स्तबक

पुरुषस्फुलिङ्गाः—

[८]

सम्पातयामास शिवः स्वमुच्चैः
अयःशलाकाभजटाकलापम्
कठोरसह्याद्रिशिलातलेऽतः
स्फुरन्ति नित्यं पुरुषस्फुलिंगाः ।।

शृङ्गोच्च पाते जब ताड़ना हैं
ईशान के तीक्ष्ण जटा दलों से
वीरांग के रूप स्फुलिंग होते
संभूत सह्याद्रि शिलातलों से ।।

शंकर ने अपने लौहशलाका समान जटाकलाप को हिमालय की कठोर शिलाओं पर गिराया जिसके संघर्षण से स्फुलिंग प्रकट हुए अर्थात् शिवा जी के संघर्ष स्फुलिंग के समान तेजस्वी पुरुषों का प्रादुर्भाव हुआ जिन्होंने भारत स्वतन्त्रता के लिए युद्ध किया ।

[६]

येषाँ भ्रुवो रौद्रपिनाकलेखा
नेत्राणि भालानलज-स्फुलिंगाः।
तर्जन्य उत्क्षत्रकुठारधारा
जयन्ति ते राष्ट्रविमुक्तिवीराः॥

भ्रू में बसी रौद्र पिनाकलेखा
रक्ताभ से नेत्र बने अंगारे
है तर्जनी भी जिनकी कुठारा
हों राष्ट्र के वीर जयी हमारे॥

जिनकी भ्रकुटि रुद्र भगवान के धनुष पिनाक की रेखा के समान है, जिनके नेत्र शंकर के तृतीय नेत्र से उत्पन्न स्फुलिंग के समान दीप्त हैं, जिनकी तर्जनी अंगुलि उत्कृष्ट कुठार धारा के समान है ऐसे राष्ट्र विमुक्ति वीरों की सदा जय जय कार हो।

[१०]

वित्तं स्वराष्ट्र-प्रविलीन-चित्तं
शस्त्रं च येषां रिपुनाशशास्त्रं
सेना स्वदेशोद्धृति कामना सा
जयन्ति ते राष्ट्रविमुक्तिवीराः

है शास्त्र ही आयुध शत्रु नाशी
राष्ट्रानुरागी मन सम्पदा है।
देशोपकारी जिनकी इपा है
वे राष्ट्र के वीर जयी सदा हैं॥

जिन स्वातन्त्र्य वीरों का चित्त राष्ट्र की रक्षा में सदा संलग्न है, जिनके शस्त्र सदा रिपुविनाशक हैं और स्वदेश के उद्धार की इच्छा ही जिनकी सेना है ऐसे स्वातन्त्र्य वीरों की सदा विजय हो।

[११]

धैर्ये समस्ताचलनिश्चयत्वं
वीर्येऽखिलोग्र-ग्रह-तीव्रतेजः।
कार्ये च येषां शिविकर्णचर्या
जयन्ति ते राष्ट्रविमुक्तिधुर्याः॥

धैर्यादि में प्रौढ़ि हिमाचलों की
वीराननों से ग्रह भी क्षयी हैं।
सद्वृत्ति राजा शिवि कर्ण सी है
वे राष्ट्र के वीर सदा जयी हैं॥

जिनके धैर्य में समस्त पर्वतों की स्थिरता है, पराक्रम में समस्त उग्र ग्रहों का तीव्र तेज है तथा कार्य में शिवि और कर्ण जैसा चारित्र्य है उन राष्ट्रस्वतन्त्रता के वीरों की विजय हो।

[१२]

तेजोमयी वाणी

येषां गिरो लेखनभाषणोत्था
भास्वद्रसाक्ता इव विद्युदुग्राः।
भुजङ्गसत्राग्निशिखा–प्रभा वा
प्राज्वालयंल्लोकहृदिन्धनानि॥

तेजमयी वाणी

ऐरावतों सी रसना तुम्हारी
संपोषती लेखनभाषणों को।
अक्षेष्टि को यज्ञ-शिखा-प्रभासी
थी दाहती लोक-हृदिन्धनों को॥

जिनकी लेखन तथा भाषणमयी वाणी सूर्य के समान तेजोमयी, विजली के समान चमत्कारिणी, भुजग(विष) तथा यज्ञाग्नि के समान प्रभावी और लोकहृदयरूपी ईंधन को प्रज्वलित करने वाली है।

[१३]

मातृभूपूजनरीतिः

स्वशोणितैरेव महाभिषेकः
स्वशीर्षपद्मैश्चरणोपहारः ।
नीराजना च प्रदहत्स्वदेहैः
येषां स्वभूपूजनरीतिरेषा ।।

मातृभूपूजनरीति

संदीप्त–सा रक्त महाभिषेकी
औ शीर्ष भी है चरणोपहारी ।
नीराजना देह बनी हुई है
ये राष्ट्र के पुत्र बने पुजारी ॥

अपने रक्त से मातृभूमि का अभिषेक करते हैं, अपने मस्तकरूपी पुष्पों की चरणों में भेंट चढ़ाते हैं तथा अपनी जलती हुई देह से आरती उतारते हैं ऐसी जिनकी मातृभूमि की पूजनरीति है ।

[१४]

भीमपराक्रमः

अराति-दुश्शासन-पीड्यमानां
पाञ्चालजावज्जनतामवेक्ष्य ।
भीमोग्रकोपैरसहिष्णुशीलैः
यैर्वाहितारक्तसरित्प्रवाहाः।।

भीम का पराक्रम

सुयोधनोत्पीड़ित द्रौपदी ने
स्वलाज के रक्षण को गुहारा ।
बृकोदरी पौरुष ने वहा दी
अराति की शोण-सहस्र-धारा ॥

जिन्होने शत्रुओं के दुःशासन(बुरे शासन) से पीडित द्रोपदी के समान जनता को पीड़ित देख कर भीम जैसे उग्र कोप तथा असहिष्णु स्वभाव द्वारा खून की नदियाँ वहायीं ।

साम्राज्यसिंहासनकम्पनम्

[१५]

यैर्ध्वंसनास्त्रोत्थ-महाप्रणाद
प्रकम्पनोर्मि-प्रभवप्रकम्पैः ।
पारे समुद्रं दृढगूढमांग्ल
साम्राज्यसिंहासनमुच्चकम्पे ॥

विध्वंस को झंकृत आयुधों में
जैनाद था मुक्त महावलों का।
संत्रस्त था सागरपारवर्ती
साम्राज्य सिंहासन आङ्गलों का ॥

जिनके विध्वंसक आग्नेयास्त्रों के महानाद से उत्पन्न वायु के झंझावात से उद्भूत भूकम्पन द्वारा सागर के पार स्थित सुदृढ़ तथा सुरक्षित अंग्रेज शासन का सिंहासन हिल गया।

सूर्यस्यविश्रान्तिसुखम्

[१६]

तमाङ्गलसाम्राज्य-वृहत्प्रदेशे
खिन्न निरस्तास्तमय-भ्रमेण
सूर्यं सविश्रान्तिसुखं विधातुं
यैः सर्वमुदध्वस्तमिवाङ्गलराज्यम् ॥

गौरांग-साम्राज्य महाविशाला
संत्रस्त था सूर्य परिक्रमा से।
विक्रान्तदर्शी ने सब नाश डाला
संप्रेरणा लेकर अर्यमा से ॥

जिन वीरों ने अंग्रेजी शासन में जहाँ सूर्य उदय से अस्त तक भ्रमण करता था उसी सूर्य को मानो विश्रान्ति देने के लिए सम्पूर्ण राज्य में उथल पुथल मचा दी और अंग्रेजी शासन को एक बार ध्वस्त सा कर दिया।

[१७]

सूर्यमण्डलभेदनम् —

शूलाग्रकोटि - प्रविलम्बि - देह	फांसी चढ़े देशव्रतानुरागी
प्रेतैर्यदीयैः खलु जीववाणैः ।	दुर्वर्ष थे जो रविबालकों से ।
भिन्नेऽर्कबिम्बे ददृशेऽक्षियन्त्रैः	जीवेषुभिन्नार्क-प्रबिम्ब देखे
वैज्ञानिकैर्हन्त कलङ्कजालम् ॥	वैज्ञानिकों ने परिजालकों से॥

शूल के अग्रभाग पर देह लटकाने से मृत्यु को प्राप्त होने वाले जिन वैज्ञानिकों(ज्ञानियों)ने जीववाणरूपी अक्षियन्त्रों द्वारा सूर्यमण्डल में कलङ्क का दर्शन किया।

[१८]

मानसराष्ट्रपूजा —

कारालये श्रृङ्खलिताग्रहस्ताः	निबद्ध,कारागृह में, करों से
सगद्गतं वाष्पनिरुद्धकण्ठाः ।	दृगाम्बु में ले तपु की तनूजा ।
सदाऽश्रुधारास्थगितस्वनेत्राः	भरे गले से पुरुषार्थियों ने
येऽसाध्नुवन्-मानसराष्ट्रपूजाम् ॥	रची महा-मानस-राष्ट्र-पूजा ॥

कारावास में हथकड़ीबद्ध हाथों वाले, आंसुओं से गदगद कण्ठ वाले, अविरल अश्रुधारा द्वारा संसिक्त नेत्रों वाले जिन राष्ट्र वीरों ने केवल मानस राष्ट्रपूजा की।

[१६]

राष्ट्रमुक्तिधर्मपण्डितः —

ये कुण्ठिता नैगडलोहबन्धैः   काटे गये शब्द करंड से जो
ये दण्डिताश्चार्मण दुष्प्रतोदैः ।   बांधे गये है अय-शृङ्खला से ।
ये खण्डिता दुःसहशब्दटंकैः   वे दक्ष हैं राष्ट्र-विमुक्ति में जो
ते पण्डिता राष्ट्रविमुक्तिधर्मे ॥   हारे नहीं हैं रिपु–चंचला से ॥

जो निगड लोह बन्धनों से(हथकड़ी बेड़ियों से) जकड़े गये जो चमड़े के हन्टरों से दण्डित हुए और जो दुःसह खरे खोटे शब्दों से खंडित (अपमानित) किये गये वे ही राष्ट्रमुक्ति के धर्मपण्डित हुए।

तृतीयस्तवकः

[२०]

तेषां सुराणामिव कार्तिकेयः   कुमार – से श्रेष्ठ दिवौकसों में
धराधराणां तुहिनालयो वा ।   हिमाद्रि–से उच्च धराधरों में ।
नभश्चराणां च विनायकोऽसौ   विहंगमों में उरगाद जैसे
विनायकोऽयं प्रथमो नराणाम् ॥   विनायकवीर हुए नरों में ॥

देवताओं में कार्तिकेय के समान, पर्वतों में हिमालय के समान आकाशचारियों में (पक्षियों में) गरुड के समान, सब मनुष्यों में विनायक वीर सावरकर अग्रगण्य थे।

[२१]

लोकेश्वराणामिव रामचन्द्रः ज्ञानेश्वरों -बीच गणेश जैसे
योगेश्वराणामिव कृष्णचन्द्रः। योगेश्वरों में यदुनाथ जी है।
ज्ञानेश्वराणां च विनायकोऽसौ मुक्त यथिकों में यह नाम भी ज्यों
विनायकोऽयं विनयाग्रपूज्यः॥ लोकेश्वरों में रघुनाथ जी है॥

संसार के राजाओं में रामचन्द्र के समान, योगेश्वरों में महाराज कृष्णचन्द्र के समान, ज्ञानेश्वर पंडितों में विनायक (गणेश) के समान, स्वातंत्र्य वीर सावरकर अपनी विनय के कारण अग्रपूज्य हुए।

[२२]

महाकवीनामिव कालिदासः धृतीश्वरों में अति धैर्यशाली
महायतीनामिव रामदासः। कवीन्द्र जैसे कवि-राजकों में।
महाधृतीनां च विनायकोऽसौ विनायकोनाम सुचिन्त्य वैसे
विनायकोऽयं चिरचिन्तनीयः॥ यतीन्द्र जैसे परिव्राजकों में॥

महाकवियों में कालिदास के समान, यतियों में समर्थ गुरु रामदास के समान, धर्यशाली व्यक्तितों में भगवान बुद्ध के समान, यह विनायक वीर सावर नित्य चिन्तन करने योग्य हैं।

[२३]

निदाघकालपुरुषः –

अदृश्यकालाभिधपूरुषस्य	अदृश्यकालाभिध मानवों को
षष्ठांशभूतो हि निदाघकालः	निदाघ षष्ठांशज़ काल का है
स षड्गुणैश्वर्यमिव प्रपन्नः	छहों गुणों युक्त नरावतारी
त्वदीयरूपेण नरावतारम् ॥	विनायकः भक्त कराल का है ॥

अदृश्यकाल नामक पुरुष का षष्ठांश भाग निदाघ(ग्रीष्म)काल है। वह मानो षड्गुणात्मक ऐश्वर्य से युक्त हो कर तुम्हारे रूप में नरावतार को प्राप्त हुआ है।

[२४]

नेत्रस्थः प्रलयानलः

चिरादनुन्मीलितरुद्रभाल-	चिरादनुन्मीलित रुद्र-गो में
नेत्रप्रलीनः प्रलयानलोऽसौ।	अदृश्यकारी प्रलयाग्नि-सी है।
किमास्थितो विश्वदिदृक्षयोत्कः	त्वदीय तेजोमय नेत्र में भी
त्वदीयतेजोमयनेत्रयुग्मे ॥	दिदृक्षुओं की जगती बसी है ॥

शिव के चिरकाल तक बन्द रहने वाले भालनेत्र में निलीन रहने वाली वह प्रलयग्नि ही क्या विश्वदर्शन की लालसा से तुम्हारे नेत्रयुगल में स्थित है ?

[२५]

वडवाग्नेः नवजन्मलाभः –

चिरान्महासागर–गर्भवासाद् पाथान्तवासी बड़वाग्नियों को
भूदर्शनोत्कः खलु वाडवाग्निः। भू देखने का जब ध्यान आया।
स्फुलिंगदीप्राक्षियुग स्वरूपं कल्पान्तकारी तब ही तुम्हारे
त्वय्याप नूनं नवजन्मलाभम्॥ अक्षाब्धि में है नव जन्म पाया॥

चिरकाल तक महासागर के गर्भ में निवास के कारण भूमि के दर्शन हेतु उत्सुक वाडवाग्नि ने ही स्फुलिग के समान दीप्त नेत्रयुगल के रूप में तुम में नया जन्मलाभ किया है।

[२६]

नेत्रदीप्ति, –

विद्युल्लता-संभव-पुष्परम्या विद्युल्लता-संभव-पुष्पकों सी
उत्कीर्ण-बालार्क-कणप्रकाशा। बालार्क की दीधितसी घनेशी।
निष्पीडिताङ्गारक-विन्दुकल्पा निष्पीड़ितागारक- विन्दुओं सी
विभ्राजतेसा तव नेत्रदीप्तिः॥ विभ्राजती थी दृग -दीप्ति तेरी॥

बिजली रूपी लता से उत्पन्न पुष्प के समान सुन्दर, बालसूर्य के विखरे हुए प्रकाशकण के समान प्रकाशमयी, अथवा चमकदार अङ्गार के समान तुम्हारी नेत्रज्योति शोभायमान है।

[२७]

रुद्रप्रियत्वं गणनायकत्वं
कविः कवीनामिति सम्मतत्वम्।
सौभ्रात्रमा शक्तिधरे प्रसिद्धं
विनायकस्येव विनायकस्य ॥

रुद्राभप्रियता गणनेतृता में
वा काव्यकारी प्रतिभा प्रकाशी।
शक्त्यादि में भी यह वीर था
दाक्षायणी- पुत्रक विघ्ननाशी ॥

विनायक अर्थात वीर सावरकर की, रुद्रभक्ति, जननायकत्व, कवित्व, शक्तिमत्ता तथा भ्रातृप्रेम गणपति गणेश की रुद्रप्रियता, देव नायकता, कवित्वशक्ति भ्रातृत्व तथा सामर्थ्य के समान थी।

[२८]

पक्षप्रचारोऽतिसुदूरदृष्टिः
दिगन्तसञ्चार महामनीषा।
परात्वरा शत्रु- भुजंग-नाशे
विनायकस्येव विनायकस्य ॥

पक्षप्रचारी, अति दूरदर्शी
आशान्त-संचारि महामना थी।
हेमांग जैसो इस वीर में भी
वैरी-भुजंगोच्छद-कामना थी।

विनायक वीर सावरकर का पक्षप्रचार (पंखों से उड़ना) अति सुदूर दृष्टि, दिशाओं के अन्त तक संचरण, महती बुद्धि तथा भुजंगरूपी शत्रु के विनाश में शीघ्रता विनायक अर्थात गरुड़ के समान थी।

[२९[

उद्धृत्य दिव्यामृतकुम्भकल्पं	ले हाथ में अमृत–कुम्भ–कल्पी
महत्तमं लोकवलं निगूढम् ।	शैलाभ– देहान्तर वज्रगाता ।
विमोचिता दास्यगता स्वमाता	पक्षीन्द्र जैसे इस वीर ने भी
विनायकेनेव विनायकेन ॥	स्वाधीन की है निज भूमि-माता ॥

गरुड़ ने अत्यन्त गुप्त महान अमृत कुम्भ को लाकर दासतः में पड़ी अपनी माता(विनता)का उद्धार किया वैसे ही विनायक वीर सावरकर ने दिव्य अमृतकुम्भ के समान जनता के गुप्त मनोबल को जगाकर दासता में पड़ी अपनी भूमाता का उद्धार किया।

[३०]

संन्यस्तखड्गार्जित-कीर्तिमत्ता	संन्यस्त खड्गार्जित कीर्ति–शोभी
निरर्थवेदोक्त–विरुद्धता च ।	युवत्व में मेहरि– पुत्र त्यागे ।
माराऱिता तीव्रतपस्विता वा	माराऱिता तीव्रतपस्विता में,
विनायकस्येव विनायकस्य	सिद्धार्थ सी ही इसकी कथा थी

विनायक वीर, सावरकर का खडग द्वारा अर्जित कीर्ति का परित्याग, वेद विहित विरोधाभास का निराकरण, कामहीनता तथा तीव्र तपस्विता विनायक अर्थात भगवान बुद्ध के समान थी।

[३१]

त्यागः सुभार्यासुतयोर्युवत्वे
तपरिततिक्षाप्रचुरं सुदीर्घम् ।
प्रबुद्धता लोकधुरीणता च
विनायकस्येव विनायकस्य ॥

विनायकोवीर रहे तपस्वी
युवत्व में मेहरि-पुत्र त्यागे ।
मुनीश-से लोक-धुरीणता में
स्वराष्ट्र के हेतु सदैव जागे ॥

विनायक का युवावस्था में सुपत्नी तथा पुत्र का त्याग, प्रचुर सहनशीलतापूर्ण दीर्घकालीन तप, प्रबुद्धता तथा लोकनायकता विनायक (बुद्ध) के समान थी

[३२]

सिद्धिलाभः —

वित्तेऽणिमाऽसौ गरिमा स्वधीते
विलोभनीयो लघिमा च मूर्तौ ।
अनन्यलभ्यो महिमा सुकीर्तौ
वशंगतस्ते खलु सिद्धिसङ्घः ॥

धनेऽणिमा थी, गरिमा सुधी में
प्रलुब्धता में लघिमा लसी थी ।
अनन्यलभ्या महिमा गुणों में
प्रसिद्धि मेंभी वशिता वसी थी ॥

वित्त में अणिमा, स्वाध्याय में गरिमा, मूर्ति में विलोभनीय लघिमा, सुकीर्ति में अन्यजनदुर्लभ महिमा; इस प्रकार सिद्धिसमूह तुम्हारे वशीभूत था ।

चतुर्थ स्तवक

[३३]

युद्धवीरः –

शस्त्रास्त्रसंभारविनाकृतोऽपि   शस्त्रास्त्र थे यद्यपि भारहीना
सेनासुहृत्कोशविवर्जितोऽपि   सेना, कि ज्यों कोष-विराम-रेखा।
पदे पदे यो रिपुमाजघानः   संसार में कोटिक शत्रुनाशी
नत्वादृशोऽन्यःखलु युद्धवीरः॥ कोई नहीं त्वादृश वीर देखा॥

शास्त्रास्त्र के समूह के विना, सेना मित्र तथा कोष से रहित होते हुए भी जिसने पग पग पर शत्रु का संहार किया, ऐसा तुम्हारे समान कोई अन्य युद्धवीर नही है।

[३४]

धर्मवीरः –

देशस्य धर्मस्य च वाङ्मयस्य   भाषा व धर्मादि स्वदेश एवम्
अस्पृश्यवर्गस्यचपीडितस्य।   अस्पृश्यता के चिर–मुक्तिवाही।
हिताय निष्काममुदग्रयत्नो   निष्काम योगी, जग में विलोका
न त्वादृशोऽन्यः खलु धर्मवीरः कोई नही त्वादृश है सिपाही॥

देश, धर्म, साहित्य तथा पीड़ित अस्पृश्य वर्ग के हित के लिए सतत यत्न करने वाला तुम्हारे समान कोई धर्मवीर नहीं है।

[३५]

दानवीरः –

कायं मनो वाङ्मतिवैभवं स्वं	पायी शुभा भारत-भाग्य-लक्ष्मी
समर्प्य सद्बन्धुकुलं गुणाढ्यम् ।	दे राष्ट्र को पंजर, बुद्धि वाणी ।
येनोर्जिता भारत भाग्यलक्ष्मीः	देखा नही संसृति ने कभी भी
न त्वादृशोऽन्यः खलुदानवीरः ॥	स्वातंत्र्य का त्वादृश वीरदानी ॥

अपने शरीर, मन, वचन वैभव तथा गुणसम्पन्न बन्धु वर्ग को समर्पित करके जिसने भारत भाग्य लक्ष्मी अर्जित की ऐसा तुम्हारे समान कोई अन्य दानवीर नहीं है ।

[३६]

स्वातन्त्र्यवीरः –

न बौद्धजैनादिविचारजन्यं	राष्ट्र के वेश -विधान की भी
म्लेच्छाङ्गलवाग्वेशविधानमूलम्	समुच्च की है तुमने पताका
यः पारतन्त्र्यं सहतेऽल्पमात्रं	महानली त्वादृश विश्व में है
स्वातन्त्र्यवीरो न भवादृशोऽन्यः ।	नही लखा वीर स्वतंत्रता का ॥

बौद्ध, जैन आदि विचारों से उत्पन्न तथा यवन, अंग्रेज आदि की भाषा, वेश, विधान आदि जनित परतन्त्रता को जिसने तनिक भी सहन नहीं किया ऐसा तुम्हारे समान कोई अन्य स्वातन्त्र्य वीर नहीं है ।

[३७]

शम्भुमूर्तिः –

कामं धुरीणाः शतशोऽपि सन्तु
सा हिन्दुताऽभूद् भवता सनाथा
पिनाकशूलोरगभूतरौद्रा
भालानलेनेव हि शम्भुमूर्तिः ॥

धुरीण हैं यद्यपि सैकड़ों ही
सनाथ हिन्दुत्व बना तुम्ही से
यथा त्रिशूलादिक की अपेक्षा
घुमूर्ति है धन्य शिराग्नि ही से॥

यद्यपि हिन्दुत्व की रक्षा में धुरीण सैकड़ों लोग हुए, परन्तु हिन्दुता आपके द्वारा ही सनाथ हुई। पिनाक, त्रिशूल सर्प आदि द्वारा रौद्ररूपमयी होने पर भी शम्भु मूर्ति भालानल द्वारा ही सनाथ होती है।

[३८]

वाक्सामर्थ्यम् –

सुहृज्जनानामथवा परेषां
साहित्यविज्ञानकलाविदां वा
निरक्षराणां शिशुयोषितां वा
न सा सभा या न जिता गिरा ते॥

चाहे सुहृद हों अथवाऽन्य कोई
साहित्य विज्ञान कला पुजारी
छोटा बढ़ा क्या सब की सभा में
थी सर्वजीता रसना तुम्हारी ॥

मित्रों अथवा शत्रुओं की साहित्य विज्ञान अथवा कलाविदों की, निरक्षरों अथवा बालकों और स्त्रियों की ऐसी कोई सभा नहीं है जो आपकी वाणी द्वारा जीत नहीं ली गई ।

[३९]

गुणसमुच्चयः –

सा वक्तृता सत्कविता च साते
सा धीरता पण्डितताऽद्वितीया
सा नेतृता सा स्थिरबुद्धिता वा
नान्यत्र चैकत्र नरेऽत्र दृष्टा ॥

प्रवक्तृता काव्यसमृद्धता वा
सुविज्ञता या वरबुद्धिलेखा
सभी गुणों का भूलोक ने है
न दूसरा त्वादृश पिण्ड देखा ॥

तुम्हारी वह वक्तृता, वह सत्कविता, वह धीरता, वह अद्वितीय पाण्डित्य, वह नेतृत्व तथा वह स्थिर बुद्धि इस लोक में किसी अन्य व्यक्ति में एकत्र नहीं देखी गयी।

[४०]

ऊर्जस्वलम् चरितम् –

तवैकवीरस्य महामहिम्नः
ऊर्जस्वलं सच्चरितं स्मरन्तः
क्लीवा अपि स्वेनुभवन्ति चित्ते
क्षणान्महावीरगुणातिरेकम् ॥

भूलोक तेरी जब वीरता औ
चरित्रता ओज विचारता है।
क्षणांश को क्लीब पुमान का भी
समग्र कापौरुष हारता है ॥

तुम सरीखे महामहिमाशाली वीर के ऊर्जस्वल सच्चरित्र को स्मरण करते हुए क्लीव पुरुष भी अपने चित्त में क्षण मात्र में महा वीरता के गुण की अधिकता का अनुभव करते हैं।

[४१]

सविग्रहो विग्रहवादः --

रणं विना-लभ्यत केन लोके	विना लड़े शत्रुगता मिली है
स्वातन्त्र्यमात्मीयमरातिगीर्णम्	स्वतन्त्रताश्री किसको व कैसे?
पृच्छन्निति त्वं खलु भाससे मे	विपृच्छते से मुझको लगे हो
सविग्रहो विग्रहवाद एव ॥	सविग्रही विग्रहवाद जैसे ॥

शत्रुओं द्वारा आक्रान्त अपनी स्वतन्त्रता को संसार में युद्ध के बिना किसने प्राप्त किया है,ऐसा पूछे जाने पर तुम मेरे लिए मूर्तिमान् विग्रहवाद (युद्ध) प्रतीत होते हो।

[४२]

स्वयंवरः --

दृष्ट्वारि-राज्यासन-नाशदक्षं	आरातिनाशी तव दक्षता में
त्वां लोकभक्तिः स्वयमेव वव्रे ।	आसक्त थी संसृति-भक्ति ऐसे ।
महेश - बाणासन - भेदशक्तं	सीतेश जी की धनु-भंग-कारी
रामं यथा भूमि--सुता प्रसन्ना ॥	सामर्थ्य में सारंग-पुत्रि जैसे ॥

शत्रु राज्य के विनाश में दक्ष आपको देखकर लोकभक्ति ने स्वयमेव आपका वरण किया। जिस प्रकार सीता ने राम को शिव धनुष के भेदन में समर्थ देखकर उन्हें स्वयं वरण किया।

[४३]

नूतनवीरभद्रः –

बलाढय–दक्षाधिप-राज्यसत्र-
नाशाय रौद्रात्मतया प्रवृत्तः ।
कुर्वन् भवान् भैरववीरघोषं
मेने जनैर्नूतन - वीरभद्रः ॥

किया तुम्ही ने वन रौद्ररूपी
विनाश दक्षाधिप राज्य-श्री का
समाज ने भैरव-घोष-कारी
तुम्हें लखा है गण शम्भुजी का ॥

वलवान दक्ष प्रजापति के यज्ञ के विनाश के लिए भयानक शब्द करते हुए वीरभद्र के समान तुम भी लोगों द्वारा नवीन वीरभद्र माने गये ।

[४४]

देशान्तरायातमहार्हवस्त्र-
दाहाग्निमुज्ज्वालयितुं प्रवृत्तः ।
दृष्टो जनैस्त्वं हि दशास्यदेश-
दावाग्निभूतः स यथा हनूमान् ॥

महाबली पुत्र भवादृशों पै
स्वदेश को भी अभिमान-सा है।
सरोष देशान्तरवस्त्र-दाही
तुम्हें विलोका हनुमान सा है ॥

विदेश से आयात मूल्यवान वस्त्रों को जलाने हेतु अग्नि प्रज्वलित करने में प्रवृत्त आप को लोगों ने लंका जलाने वाले दावाग्नि-स्वरूप हनुमान के समान देखा ।

[४५]

चाणक्यः –

शस्त्रास्त्रशास्त्रैस्तनुवाङ्मनोभिः	शस्त्रास्त्रशास्त्रादि शरीर से है
शठेषु शाठ्यं प्रतियोज्य नित्यम्।	दुष्टेशु दौष्ट्यं-प्रण को निभाया
वाह्यान्तरस्थारिगणान् प्रशाम्य	तेरे गुणों में इस लोक ने है
साम्यं त्वयाप्तं चणकात्मजस्य ॥	चाणक्य जैसा परिसाम्य पाया ॥

शस्त्र, अस्त्र, शास्त्र द्वारा शरीर, मन और वचन से शठों में शठता का प्रयोग करते हुए वाह्य ओर आन्तरिक शत्रुओं को शान्त करके आप ने चाणक्य से समता प्राप्त की।

[४६]

नचिकेता –

मृत्योरिवागारमधिष्ठितेन	प्रचण्डता मृत्युजिता रही है
कारालयं भीषणमेककेन।	महाप्रतापी जन-नेक्षु-जैसी।
त्वया हृता तत्त्वविचिन्तकेन	विवेक औ चिन्तन में तुम्हारे
विशेशता सा नचिकेतसोऽपि ॥	विशेषता थी नचिकेत जैसी ॥

मृत्यु के निवास के समान भीषण कारागार में रहते हुए एकाकी तत्वचिन्तन द्वारा आप ने नचिकेता की विशेषता भी प्राप्त की।

[४७]

आरुणिः –

स्खलत्परीवाहमपां जनानां	विदेशता में बहते जनों को
निरुन्धतः स्वात्मदृढार्गलेन	दृढ़ान्दु सा है तुमने उबारा
एकाकिना क्षेत्रहितैकहेतोः	कियार भूत के अवरोधकारी
तवारुणेश्चात्र तुलैव नास्ति ॥	न साम्य है आरुणि से तुम्हारा ॥

गुरु के खेत हेतु, बहते हुए जल को अपने शरीररूपी दृढ अर्गला द्वारा रोकने वाले एकाकी आरुणि की, लोगों के बहते हुए प्रवाह को अपने देश के हित हेतु अपनी आत्मा की अर्गला द्वारा रोकने वाले आप के साथ तुलना ही नही है।

[४८]

कुरूढिवृक्षं निहतात्मसत्त्वं	कुरूढियों की विटपावली के
निर्मूलमुन्मूलयितुं प्रवृत्तः ।	असंग-शस्त्राभि समूल भेदी ।
असङ्गशस्त्रेण भवान् विभाति	विवेकशीला जनदृष्टियों में
अश्वत्थवृक्षं तमिवात्मवेदी ॥	रहे सदा ही तुम आत्मवेदी ॥

आत्मवेदी –

आत्मसत्व का हनन करने वाले कुरूढि रूपी वृक्ष को उन्मूलन करने को प्रवृत्त, आप असङ्ग रूपी शस्त्र द्वारा कुरूढि रूपी अश्वत्थ वृक्ष का उन्मूलन करने वाले आत्मवेदी के समान हो।

[४६]

सर्वस्वदानम् –

श्येनाय विप्राय सुराधिपाय	दध्यंच, राजा शिवि-कर्ण ने है·
शिविश्च कर्णश्च दधीचिरत्र।	देवेन्द्र, दाक्षाय्य महागुरू की।
ददौ हि मांसं त्वचमस्थिजालं	दीं अस्थि क्रव्यादिक वर्म तू ने
भवान् स्वदेशाय तु सर्वमेव॥	सर्वस्व ही देश स्वमातृ भू को॥

राजा शिवि, कर्ण तथा दधीचि ने इस लोक में बाज, ब्राह्मण और इन्द्र के लिए अपने मांस, चर्म तथा अस्थियों का दान किया। परन्तु आपने तो अपने देश के लिए सर्वस्व दान कर दिया।

[५०]

सागरस्य प्रतिशोधः –

देशान्तरेऽम्भोधि-तट-स्थितेन	स्वमातृ-भू-दर्शन-व्यग्र तूने
स्वमातृ-भूदर्शन-विह्वलेन।	विदेश में सागर को झिपाया।
संतर्जितोऽब्धिः प्रतिशोधबुद्धया	तदब्धि ने ही प्रति शोधबुद्धया
त्वां निर्जू गूहेव निजान्तरीपे॥	स्व-दीप में था तुझको छिपाया॥

विदेशी (इंगलैण्ड) के सागर तट पर रहते हुए, अपनी मातृभूमि के दर्शन हेतु विह्वल आपके द्वारा तर्जित सागर ने प्रतिशोध की भावना से ही आपको अपने द्वीप (अण्डमान) में छिपा लिया था।

[५१]

वडवाग्निः -

दूरीकृतोऽसह्य-महाप्रतापः	आंग्लाधमों ने तुझको रखा था
द्वीपान्तरे ह्याङ्ग्लदुरात्मभिस्त्वम्।	दूरस्थ द्वीपान्तर मध्य ऐसे।
मैनें जनैर्वाडवजात वेदाः	संताप से व्याकुल सागरों ने
किमन्तरस्थोऽम्बुधिना निरस्तः॥	संत्याज दी हो वड़वाग्नि जैसे

दुरात्मा अंग्रेजों ने आपके प्रताप को न सह कर आपको द्वीपान्तर (अण्डमान) में निर्वासित कर दिया। मानो सागर ने अपने भीतर रहने वाली वाडवाग्नि को सहन न करके उसे द्वीप में रख दिया।

स्तवक ५

[५२]

मुक्तिप्रदः प्रणवः -

स्वातन्त्र्यलक्ष्मी जयघोष एव	माना तुम्हारे जय-घोष को है
त्वया निज प्राणवल-प्रयुक्तः।	स्वातंत्र्य-श्री ने मन-प्राण जैसा
त्वत्पादचिह्नानुगतैः स मेंने	पादानुरक्ता वह मानती थी
मुक्तिप्रदो हि प्रणवः स नूनम्॥	मुक्ति प्रदायी भगवान जैसा॥

आपने अपनी प्राण शक्ति से स्वातन्त्र्य लक्ष्मी का जयघोष किया था जिसे आपके पदचिन्हों पर चलने वाले पुरुषों ने प्रणव ओंमकार के समान मुक्ति दायक माना था

[५३]

राष्ट्रबोधनम् –

अखण्ड–दुर्दास्य–विमोह-निद्रां
गतं स्वराष्टं प्रतिबोधकस्त्वम्।
सदाऽकरोर्जागरणप्रयत्नं
वीरोग्रघोषैः रुधिरावसेकैः ॥

लहू-कणों की चिनगारियों से
तमिस्र भू का तुमने भगाया।
प्रसुप्त था जो परतंत्रता में
स्वराष्ट्र को है तुमने जगाया ॥

आपने अपने उग्र वीरगर्जन एवम् अपने रुधिर सिंचन से अखंड दासता की बेड़ियों में जकड़े हुए, दासतावमोह निद्रा के वशीभूत इस राष्ट्र को जगाने का प्रयत्न किया, अतः तुम ही इस राष्ट्र के प्रतिबोधक रहे।

[५४]

विषवैद्यः –

स्वमातृ भूमिं रिपुसर्पदंश–
-सम्भूतपीडां सहसाऽऽकलय्य।
नीरोगतार्थे विषवैद्य !शस्त्र
-क्रिया सदैवाभिमता तवासीत् ॥

थी राष्ट्र-भूमा रिपु-सर्प दंष्ट्रा
पीडायमाना परिवेदना से।
नीरोगता हेतु सचेष्ट तूने
दी रोग से मुक्ति अयः क्रिया से

रिपुरूपी सर्पदंश से पीड़ित अपनी मातृभूमि को देखकर हे विषवैद्य तुम्हें उसकी नीरोगता के लिए शस्त्र क्रिया ही नित्य अभीष्ट रही।

[५५]

शिवाऽऽजि: –

निर्भर्त्स्यमानो रिपुभिर्मदान्धैः
स्वत्वाभिमानैक धनस्त्वदाभः ।
शिवा ऽऽजिरेवेति कथं न गर्जेद्
वीरो गुरुर्यस्य मतः शिवाजिः

मदान्ध वैरीदल के विनाशी
वनेश जैसे वन-राजियों में ।
भलाशिवाशिष्यककीनक्योंहो,
शिवादृशी रोर शिवाजियों में

उन्मत्त शत्रुओं से निरन्तर तिरस्कार प्राप्त कर स्वत्वाभिमानी आपने (आजि) संग्राम को ही (शिव) कल्याणकारी माना । जिसने शिवाजी को ही अपना गुरु माना हो वह(शिवा+आजि)कल्याणकर संग्राम का गर्जन क्यों न करे ।

[५६]

सुनीति: –

ये यान्ति सार्धं सुखमेव यान्तु
ये वा तटस्थाश्च तथैव सन्तु ।
रुन्धन्ति ये तांस्तु विरुध्य कार्यं
करिष्य इत्यैव हि ते सुनीतिम्

समोद जाये गमनेच्छु जो हो,
तटस्थता भी तुमने न हेरी ।
न्थाभिमानी अवरोधकों के
विरोध की थी शुभ-नीति तेरी

जो हमारे साथी हैं वे सुखपूर्वक हमारे साथ चलें । जो तटस्थ है वे तटस्थ रहें । परन्तु जो विरोधी है मैं उनके विरुद्ध ही कार्य करूंगा, यह आपकी सुनीति रही ।

[५७]

राष्ट्रियत्वम्

परम्परा प्राप्तमनादिसिद्धं	राष्ट्रीयता है शुचि हिन्दुता ही
हिन्दुत्वमेवात्र हि राष्ट्रियत्वम् ।	गाया सदा ही तुमने तराना
सिद्धान्तमेनं तव तर्कशुद्धं	संपूर्ण भू के मतिजीवियों में
को नानुमन्येत विवेकशीलः ।	है कौन ऐसा जिसने न माना

परम्पराप्राप्त, अनादिसिद्ध हिन्दुत्व ही राष्ट्रियत्व है,आपके इस तर्कसम्मत शुद्ध सिद्धान्त को कौन विवेकशील स्वीकार नहीं करेगा ?

स्तबक ६

[५८]

हिमाद्रिकन्या –

कायेन्द्रियस्वान्तव चः क्रियाभिः	देशव्रती भक्ति सदा तुम्हारी
तपश्चरन्ती तव देश भक्तिः ।	प्राणोत्तरा थी, तपु सी उजासी
प्राणप्रियप्राप्तिपरेव भाति	ईशान की प्राप्ति परा सुशीला
पञ्चाग्नि–मध्यस्थ-हिमाद्रिकन्या	पंचग्नि-शोभी गिरि-कन्यका-सी

शरीर, इन्द्रियाँ, अन्तःकरण, वाणी और कर्म से तप करती हुई आपकी देशभक्ति प्राणप्रिय की प्राप्ति हेतु पञ्चाग्नि मध्य स्थित पार्वती के समान शोभायमान हुई ।

[५६]

मातृभूवन्दनम् –

पञ्चाशदब्दान्तमसह्यकारा
–निवास–दण्ड श्रवणेऽप्यभीकः ।
यदब्रवीस्त्वं हि तदाङ्ग्लराज्य-
-विध्वंसमन्त्रप्रखरं बभूव ॥

कारागृहों में तुमने बिताये,
पांचाश संवत्सर कष्टगामी ।
गोरे जनों के प्रति था तुम्हारा
विध्वंस का मंत्र हुआ सकामी ॥

पचास वर्ष पर्यन्त कारागार भोगने का दण्ड सुनकर भी निर्भयता पूर्वक तुमने अपने उद्गार प्रकट किए, वे ही उद्गार अंग्रेज शासन विध्वंस के महामंत्र सिद्ध हुए ।

[६०]

वल्कलग्रहणम् –

निरस्य वैदुष्यविभूषणानि
धृतानिकारोचित–कर्पटानि -
सुखं त्वया त्यक्तसुखेन यूना
रघूत्तमेनेव हि वल्कलानि ॥

त्यागा स्व-वैदुष्य-विभूषणों को
धारे निकारोचित वस्त्र ऐसे ।
तारुण्य में ही सुख त्याग धारे
सीतेश ने वल्कल वस्त्र जैसे ॥

तुमने अपने वैदुष्य के विभूषक वस्त्रों को त्याग कर कारावास के वस्त्र धारण किये, जिस प्रकार श्रीराम ने युवावस्था में अपने राज्य सुख को त्यागते हुए वनवासोचित वल्कल वस्त्र धारण किये थे ।

[६१]

मातृभूवन्दनम् –

सम्प्रस्थितस्त्वं चिरकष्टवासे
भक्त्या नमन् स्वां प्रति मातृभूमिम्
दृष्टोऽसि लोकैर्गलदश्रुधारैः
रामो यथा मातृपदावनम्रः

चले व्यथावासि प्रणाम देते
स्वमातृभू को चल दृष्टियों से
खरारि जैसे तुम भी गये हो
लखे गये रोदित दृष्टियों से ॥

अंडमान कारावास के लिए गमन समय अपनी मातृभूमि को नमस्कार करते हुए अश्रुधारा पूर्ण नेत्रों से जनता ने तुम्हारा दर्शन किया जिस प्रकार वनवास जाते समय अपनी माता के चरणों पर प्रणाम करते हुए श्रीराम का जनता ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से दर्शन किया था।

[६२]

विदेहकन्या –

दन्दह्यमानाऽपि मतिस्त्वदीया
बभौ स्वदेशैकहितं स्मरन्ती।
श्री रामकल्याण–परायणेव
चिताधिरूढाऽपि विदेहकन्या

सदा रही है शुचि बुद्धि तेरी
स्वराष्ट्र– भूमा-हित दह्यमाना
स्वनाथ के चिन्तन में सुलग्ना
चितागता भूमि-सुता समाना ॥

कारावास में कष्टों से व्यथित केवल स्वदेश हित चिन्तन स्मरण कारिणी तुम्हारी बुद्धि चिन्ता में आरूढ़ फिर भी रामकल्याण कथा स्मरण में व्यग्र सीता के समान शोभित होती है।

[६३]

समुद्राल्लंघनम्

किं तत्र चित्रं नभसा गतेन
क्रान्तो नभस्वत्तनयेन सिन्धुः ।
ताताङ्कमास्थाय जलाशयं ते
सर्वेऽपि बालाः सुखमुत्क्रमन्ति ॥

आश्चर्य क्या सागर लाँघने में
थे वीर वातात्मज धन्यनामी ।
तातांग में बैठ जलाशयों में
होते अनेकों शिशु पारगामी ॥

वायुपुत्र (आकाशतनय) हनुमान ने आकाश मार्ग द्वारा सागर को पार किया, इसमें आश्चर्य क्या है ? पिता की गोद में बैठा हुआ बालक भी जलाशय को सुखपूर्वक पार कर जाता है ।

[६४]

जातं तदाश्चर्यमभूतपूर्वम्
अरातिनिर्बन्धगतेन चापि ।
उल्लङ्घितोऽब्धिःस्वभुजाश्रयेण
एकाकिना भारत भूसुतेन ॥

आश्चर्य है मात्र यही कि तूने
है तोड़ फेंका रिपु-चक्र-जाला
शक्त्यश्री-सी निज बाहुओं से
एकांग ही सागर लांघ डाला ॥

(परन्तु) अभूतपूर्व आश्चर्य है कि शत्रु के बन्धन हथकड़ी आदि से बंधे होने पर भी भारत माता के एक सपूत ने अपनी भुजाओं के सहारे अकेले ही समुद्र पार कर लिया ।

[६५]

कन्याहरणम् :–

दुर्लङ्घ्यताकीर्तिसुता मदीया
प्राग्वानरेणाद्य हृता नरेण।
इत्येव निर्विण्ण इवाब्धिराजो
वेलातटे हन्ति तरङ्गहस्तान्

अलंघ्यशीला मम कीर्तिकन्या
हरी गयी है नर -वानरों से।
सचिन्त्य हो सिंधु महादुःखी है
प्रताड़ता रोध हली –करों से ॥

समुद्र की दुर्लभ्यता, कीर्तिरूपी कन्या का अपहरण प्रथम वार वानर हनुमान ने और आज एक मनुष्य सावरकर ने किया है इसी लिए मानों खिन्न हताश होकर समुद्र रूपी राजा अपने वेला तट पर तरंग रूपी हाथों को पटक रहा है तरंगें समुद्र तट पर आती ही तरं.ों का वेला तट पर आना कवि द्वारा तरग रूपी हाथों का पटकना उत्प्रेक्षित है।

[६६]

मातृ भूशोक :–

पूर्वाब्धिममार्गेण सुतः प्रियो मे
निर्बध्यनतः क्वचनाङ्ग्लनीचैः।
इत्याकुलाया वहति द्रवार्तं
गङ्गामयं मानसमार्य भूमेः ॥

नीचांग्ल मेरा सुत ले सिधारे
जाने कहाँ सागर–मार्गद्वारा।
व्याघात होता जब सोचता है
दु;खार्त –सा मानस-राष्ट्र प्यारा

मेरे प्रिय पुत्र सावरकर को नीच अंग्रेजों ने पूर्वी सागर के मार्ग से ले जाकर बन्धन में डाल दिया है इस शोक से व्याकुल हो कर भारत माता का द्रविस मानस गंगमय होकर पूर्वसागर की ओर बह रहा हैं।

७ स्तबकः

[६७]

भावकेली :—

प्रेम्णा मराठीं च रुषांऽऽग्लवाणीं
द्वेषादिवोर्दुं विनयेन हिन्दीम्।
भक्त्या पुनर्देवगवीं भजन्ती
तनोति वृत्तिस्तव भावकेलीम्॥

हिन्दी मराठी, शुचि देववाणी
आंग्लीय औ उर्दू तवानुचेरी
भाषा सभी सीख बने गुरु वे,
रही सदा भावुक वृत्ति तेरी॥

मराठी भाषा को प्रेम से अंग्रेजी को क्रोध से उर्दू को द्वेष से हिंदीं को विनय पूर्वक तथा देवभाषा संस्कृत को भक्तिपूर्वक ग्रहण करती हुई आप की वृत्ति भावजगत में क्रीड़ा करती है।

[६८]

लिपिशुद्धि :—

निरस्य पूर्वाक्षरवर्णभक्तिं
त्वयार्पिता नागर वर्णलेखा।
सौभाग्यभूषेव गिरोऽमलायाः
दुष्यन्तकेनेव शकुन्तलायाः॥

निसार पूर्वाक्षर-वर्ण भक्ती,
प्रदान की नागर वर्ण-लेखा।
शकुन्तला के दुष्यन्त तूने,
उरेह दी है शुचि ज्ञान –रेखा॥

आपने परम्परागत वर्णभक्ति को त्यागकर पवित्रवाणी संस्कृत आदि को अलंकृत करने वाली नवीन नागरी वर्णमाला अर्पित की जिस प्रकार दुष्यन्त नें शकुन्तला की वल्कलादि वेशभूषा को त्याग कर सुन्दर नागर वेशभूषा प्रदान की।

[६९]

भाषाशुद्धि :–

म्लेच्छाङ्गलसम्पर्कवशात् स्वकीयां
भाषामहल्यामिव नष्टशीलाम् ।
पुनः पुनस्तां स्वपदप्रयोगः
श्रीरामवत्त्वं प्रयतः पुनासि ॥

स्वकीय भाषा सरिसा अहल्या
विनष्ट म्लेच्छांगल त्रासदी से ।
बने प्रतापी रघुनाथ तूने,
पवित्र की है अपने पदों से ॥

मुसलमान तथा अंग्रेजों के सम्पर्क के कारण जिस मराठी भाषा का शील अहल्या के समान नष्ट हो गया था उसी भाषा को अपने शुद्ध पद (शब्द, चरण) के प्रयोग से श्रीराम के समान उद्धार किया ।

[७०]

साहित्यविलास :–

श्चोतन्तदान् गन्धगजानिवारीन्
निहत्य साहित्यकलारतस्त्वम् ।
चाणूरकंसप्रमुखान् प्रमथ्य
कुब्जारतश्रीहरिवद् विभासि ॥

बने सुसाहित्य कलानुरागी
मदान्ध आराति विनास ऐसे ।
विभिन्न कंसादिक के विनासी
प्रियारत श्रीयदुनाथ जैसे ॥

मदमत्त गंधगज के समान शत्रुओं का संहार करके साहित्य तथा कलाओं में रत आप, चाणूर कंस आदि का हनन करके कुब्जा में अनुरक्त भगवान कृष्ण के समान शोभायमान हो ।

[७१]

कुण्डलिनी–जागरणम् :–

सदात्मतत्त्वैकपरायणस्त्वम्
उद्‌गीय काव्यात्मपवित्रमन्त्रान् ।
प्रबोधयन्भासि जनात्मशक्ति
योगी यथा कुण्डलिनीं प्रसुप्ताम् ।।

सदात्मतत्त्वैक-परायणी से
स्व काव्य के पावनगीत गाते
प्रबोधते हो तुम लोक योगी
प्रसुप्त ज्यों कुण्डलिनी जगाते

सदा आत्मतत्व की खोज में यत्नशील आप काव्यात्मक पवित्र विचारमन्त्रों से भारत की जनशक्ति को जाग्रत करते हुए शोभायमान होते हो जैसे कि योगी सोई हुई कुण्डलिनी को जाग्रत करता है ।

[७२]

राष्ट्रगीतानि :–

स्वयं जगन्नाथपद प्रसूतैः
तथा न गङ्गालहरी-समूहैः ।
यथा त्वदीयैः शुभराष्ट्रगीतैः
जातो जनानामिहमुक्तिलाभः ।।

न शान्ति देती सुरवाहिनी भी
यथा भुवों के अभिक्रन्दनों को ।
यथा तुम्हारे शुभ गीतकों से
विमुक्ति का लाभ हुआ जनों को

स्वयं पण्डितराज जगन्नाथ द्वारा रचित गंगालहरी के गातन द्वारा लोगों को वैसा मुक्तिलाभ नही हुआ जैसा कि आपके राष्ट्र-गीतों को गाकर लोगों को मुक्ति(स्वातन्त्र्य) लाभ हुआ ।

[७३]

'कमला,–काव्यम् :–

चिराय वित्तेश- विमूढ-सङ्गात्	विमूढ पक्षेश्वर से विरक्ता
खिन्नेव विद्वद्रसिकोन्मुदे सा।	प्रकाम विद्वद्रसिकोद्‌गभ्या।
सारस्वंत रूपमुपेत्य रम्यं	पुनीत तेरे कविताम्बुजों में
त्वत्काव्यपद्म कमलाऽध्युवास ॥	स्वयं विराजी'कमला' सुरम्या

चिरकाल तक मूर्ग धनपतियों के सम्पर्क में रहने से गि लक्ष्मी विद्वान रसिकों की प्रसन्नता हेतु आव्य रूपी कमल में सरस्वती के रूह में निवास किया।

[७४]

गोमन्तकोत्पीडन -पीडितस्य	गोमन्तकोत्पीड़न से हुई थी
तवाद्वितीयस्य कवेर्हिवाणी।	वाणी तुम्हारी अभिभूत ऐसी
क्रौञ्चव्यथा–व्याकुलितान्तरस्य	क्रौचव्यथा-पीड़ित-चित्तवाली
च्छन्दोमयी ह्यादिकवेरिवाऽभूत् ॥	छन्दोमयी आदि-कवीयन्द्र जैसी

गोमन्तक पीड़ा से पीड़ित आप सरीखे अद्वितीय कवि की वाणी क्रौञ्च पक्षी की व्यथा से पीड़ित आदि कवि वाल्मीकि की वाणी के समान हुई।

[७५]

गोमन्तक काव्यम् :-

विधिज्ञवर्यस्य तथापि वाणी
कठोरसत्तर्क कुठारधारा।
गोमन्तकापद्भिरभिद्रुताऽभूत्
आर्तान्तरङ्गप्रदकाव्यधारा ॥

विधिज्ञता से अभिषिक्त तेरी
सतर्क वाणी लगती कुठारा।
तदैव गोमन्तक - प्रेरणा से,
बनी शुचा अन्तस काव्यधारा ॥

विधिवेत्ता बैरिस्टर सावरकर की वाणी कठोर सत्तर्क रूपी परशुधारा के समान थी जो गोमंतक की आपत्तियों से द्रवित हो कर आर्त अंतःकरण के द्रव स्वरूप गोमंतक काव्यरूप में प्रस्फुरित हुई।

[७६]

भित्तिलेखनम् :-

कारालयोद्भित्तिषु कृष्णवर्णैः
काव्यैस्त्वयाङ्गारकणाचितैर्हि।
कृतं महाराष्ट्रगिरो यशस्तत्
शुभ्रं यथाऽन्यैर्न तथा सहस्रैः

कारागृहों में विरचे गये जो,
है काव्य के वर्ण अंगारकों से
जैसी शुभा कीर्ति तुम्हें मिली थी
वैसी न लक्ष्येतर काव्यकों से ॥

तुमने कारागार की दीवारों पर अपने मराठी काव्य को कृष्ण वर्ण अक्षरों में लिखकर अपने यश से उज्जल किया जेसा अन्य सहस्र काव्यों ने भी नहीं किया।

[७७]

राजपूती :–

सङ्ग्राम–संस्मृत्युपजात रोम–	युद्धांगणों में निज पुत्रकों के
–हर्षाङ्गकम्पं हि निजार्यपुत्रम्।	वीरांग–रोमादि विकम्पकारी
सा राजपूतीव विभाति वीरा	विशोमती क्षत्रिय कन्याका सी
निर्भर्त्संयन्ती कविता त्वदीया ॥	निर्मर्त्संयन्ती कविता त्वदीया ॥

संग्राम के स्मरण से उत्पन्न रोमांच और हर्ष से फरकते अंग वाले अपने पति को प्रेरित करने वाली राजपूती के समान आपकी कविता शोभायमान होती है।

[७८]

शारदा –

आस्वादिता शारदपुष्पमाध्वी	पदावली शारद–पुष्पकों–सी
आलिङ्गिता शारदचन्द्र लक्ष्मी।	सुवर्ण है शारद–चन्द्रिका से।
आलोकिता शारदहास्य कान्तिः	उन्हें मिली शारद-हास्य-शोभ
येनानुभूता तव शारदा सा ॥	अभिज्ञ है जो तव शारदा से ॥

जिसने तुम्हारी शारदा वाणी का आस्वादन किया उसने शरद् ऋतु के पुष्पों के मधु का आस्वादन किया उसने शरद् के चन्द्रमा की लक्ष्मी का आलिगन किया। तथा शरद के हंसते हुए पुष्पों के हास्य का आलोकन किया। अतः तुम्हारी शारदा सर्व गुण सम्पन्न है।

[७९]
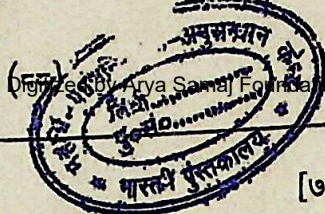
वाङ्माधरी :–

त्वदीयवाणीमधुमाधुरी सा	वाणी तुम्हारी मधु-माधुरी को
येनाऽनुभूता सकृदेव दैवात् ।	जो एकदा भी अभिजान पाते।
द्राक्षां स रुक्षां मनुतां मनुष्यः	वे पुंस भदारक गोस्तनी वां
सुधां सुधामेव सुधाशनोऽपि ॥	पीयूष को भी अति रुक्ष आते ॥

आपकी वाणी के मधु माधुर्य को संयोगवश जिस मनुष्य ने एक बार भी स्वाद अनुभव किया वह दाख को रूखा मानता है और सुधा पान करने वाला देवता भी सुधा को सुधा(चूना) ही मानता है

[८०]

वीर-शृङ्गार :–

तवैकवीरस्य महाकवेश्च	शोभायमाना रसना त्वदीया
वाग्वीर-शृंगार-रसाविभाति ।	श्रृंगार जो वीर-रसापगा-सी।
सिंहासनाधिष्ठित शारदेव	हंसासनाधिष्ठित चण्डिका-सी
हंसासनाधिष्ठित चण्डिकेव ॥	सिंहासनाष्ठिल शारदा सी ॥

आप अद्वितीय वीर और महाकवि की वीर तथा शृङ्गाररस से भरीं वाणी सिंह पर आरूढ शारदा के समान तथा हंस पर आरूढ चण्डिका के समान शोभायआन होती है।

[८१]

गीतोपनिषद् –

हिन्दुत्वसंज्ञं तत्र सम्प्रगीतं
स्वराष्ट्रधर्मोचितदर्शनंयत् ।
तद्भारतस्य प्रहतात्मबुद्धे:
जातं हि गीतोपनिषत्समानम् ।।

त्वदीय हिन्दुत्व निदर्शनों को
गया स्वधर्मोचित पंथ पाना ।
वही बना भारत बुद्धि को था
पुनीत गीतोपनिषत्समाना ।।

हे वीर तुमने राष्ट्र धर्मोचित दर्शन हिन्दुत्व का निर्माण किया जो हिन्दुत्व आत्म बुद्धि नष्ट भारत के लिए उपनिषद के समान कर्तव्य प्रेरक सिद्ध हुआ। महाभारत में किंकर्तव्यविमूढ़ भारत अर्जुन को जिस प्रकार भगवान कृष्ण का गीतोपनिषद् उपदेश कर्तव्य प्रेरक हुआ वैसे ही भारत भूमि को आपका हिन्दुत्व सन्देश उपनिषद् स्वरूप है।

[८२]

भगीरथ –

लोकान्तरस्थामिव दिव्यगंगां
स्वातन्त्र्यगाथां तपसाऽऽवगत्य ।
भगीरथेनेव हि ते त्वयैव
समुद्धृता: पूर्वतना: प्रवीरा: ।।

लोकान्तरस्था सुरवाहिनी है
स्वाधीनता की तुमने वहायी ।
उद्धार तूने कर पूर्वजों का
संसार में पावन कीर्ति पायी

जिस प्रकार भगीरथ ने स्वर्ग लोक स्थित दिव्य गंगा को अपनी कठोर तपस्या द्वारा लाकर अपने पुरखों (सगर के पुत्रों का उद्धार किया वैसे ही हे वीर तुमने भी परदेश मध्य में स्थित अपनी १८५७ की स्वातन्त्र्य गाथा को अपनी कठोर साधना से सम्पादन कर अपने पूर्वजों का उद्धार किया और वीरों में जागृति उत्पन्न की।

[८३]

सिंहावलोकनम् –

मदान्ध-शत्रु-द्विप-सप्रमाथ-
श्चान्तस्य ते स्वात्मचरित्रलेखा
गुञ्जन्मिलिन्दाकुलमञ्जुकुञ्ज-
विश्रान्तसिंहप्रेविलोकनाभः ।।

मदान्ध शत्रु द्विप नाशकारी
लिखी त्वदीयात्मचरित्र आभा
लगी मिलिंदाकुल कुञ्ज में है
विश्रान्त सिंह प्रविलोकनाभा ।।

गुंजित भ्रमरों से आकुल, एवम् सुन्दर कुन्ज में स्थित मदान्ध गज को परास्त कर जैसे सिंह उसे गर्वित होकर देखता है, वैसे ही मदान्ध अंग्रेज शत्रुरूपीद्विप का ध्वंस कर तुम्हारा आत्मचरित्र लेख सिंहावलोकन के समान है ।

[८४]

तर्कवादः –

प्रवर्तमाना परपक्षभेदे
सुदुर्धरोऽसौ तव तर्कवादः
भिनत्ति निर्मूलतया गिरीन्द्र-
पक्षच्छिदुग्रोहि यथेन्द्रवज्रः ।।

वितर्क तेरे पर पक्ष भेदी
लिए शुभाशीःकमलासिनी का
गिरीन्द्र के पक्ष विनाशकारी
शतार जैसे सुरग्रामणी का ।।

परपक्ष का खण्डन करने में तत्पर तुम्हारा उद्भट तर्कवाद पर पक्ष का वैसे ही खन्डन कर देता है जैसे इन्द्र का वज्र पर्वतों के पक्ष समूल उन्मूलन कर देता है ।तुम्हारे तर्कों के समक्ष शत्रुओं का सुदृढ़ पक्ष भी समूल नष्ट हो जाता है ।

[८५]

इतिहासकथनम् –

भूतार्थविद्वन्नितिहासगूढान्
भावान् भवान् गूढतया ब्रवीषि
यदा तदा सभ्यहृदन्तरस्थः
साक्षी परात्माऽप्यनुहुंकरोति ॥

गूढेतिहासी घटनाक्रमों की
उच्चारते हैं जब भी महत्ता
सामाजिकों के हृदयान्तरों से
हुंकार देती परमात्मसत्ता ॥

हे इतिहास पण्डित जब तुम सभी भावों से इतिहास की गूढ़ घटनाओं का विश्लेषण करते हो तो सभा में स्थित सभ्य जनों की आत्मा अनुमोदन रूप में हुंकार देने लगती है क्योंकि परमात्मा भगवान सर्व साक्षी भूतकालिक घटनाओं का प्रत्यक्ष कर्ता है अतः उसका अनुमोदन घटनाओं का स्वयं प्रमाण है।

[८६]

कालपुरुषस्य जन्मपत्रिका –

प्रवर्तयिष्यन् नवभारतीयम्
स्वतन्त्र राष्ट्रोचितकालमानम्
त्वं कालशश्वत्पुरुषस्य जन्म
सत्पत्रिकां कर्तुमिव प्रवृत्तः ॥

स्वतन्त्र राष्ट्रोचित कालमापी
प्रवृत्त की हैं तुमने ऋचायें।
लगा कि जैसे कालात्मजों की
प्रणीत की जन्म सुपत्रिकायें ॥

अपनी ओजस्विनी नवीन वाणी से नव भारतीय स्वतंत्र राष्ट्रोचित कालमान नवीन भारतीय पञ्चांग का निर्माण करके तुम मानों कालपुरुष की जन्म पत्रिका निमाण कर रहे हो ऐसा प्रतीत होता है। सत्पुरुष अपने श्रेष्ठ कार्यों से देश काल का निर्माण कर जनता का मार्ग दर्शन करते हैं और अपने सिद्धान्तानुसार उसको उन्नति की ओर ले जाते हैं।

[८७]

वक्तृत्वम् –

'हे वान्धवा' ! इत्यतिभाव पूर्ण
सम्बोधनं संविशदेव कर्णे ।
त्वद्भाषणस्यावसरे करोति
सर्वेन्द्रियाणामिव कर्णभावम्

संबोंधनों में जब भी तुम्हारा
'हे बान्धबों'! शब्द सुना जनों ने
सामाजिकों के हृदयान्तरों से
हुंकार देती परमात्मसत्ता ।।

हे वीर ! सभा में भाषण के समय जनता के लिए आपका भाव पूर्ण सम्बोधन हे भाईयों जब कान में पड़ता है तो समस्त जनता की सब इन्द्रियां मानों कर्ण रूप हो जाती हैं अर्थात जनता तन्मय होकर आपके भाषण को सुनती है और भाषण के समय किसी अन्य इन्द्रिय का व्यापार नहीं चलता

[८८]

वाणीलक्ष्मीः –

सा मन्दरोत्थापित दुग्धसिन्धु
तुङ्गोर्मि चञ्चच्चरणेव लक्ष्मीः
त्वद्भारती लोकमनस्तरङ्ग
सञ्चारिणी भाति सुवर्णकान्तिः ।।

मनस्तरंगों पर सोहती है
सुवर्णकान्ता रसना तुम्हारी
मितद्रु की चंचल उर्मियों से
यथा अधीरा कमला कुमारी ।।

तुम्हारे व्याख्यान में सुवर्ण कांति अच्छे शब्दों का चयन लोक मानस में तरंगित होकर मन्दराचल मन्थन से उत्थापित दुग्ध सिन्धु उत्थित तरल ऊंची तरंगों से क्षालित चरणा लक्ष्मी के समान तुम्हारी वाणी सुवर्ण कांतिमती होकर सुशोभित होती है ।

[८९]

वाणीकात्यायनी

दुष्टारिदौरात्म्तनुस्मरन्ती	युद्धोत्सरन्ती समरांगणों में
सक्रोधमत्युद्धतमुत्सरन्ती।	दुष्टारि–नासार्थं लिये कुठारा।
तवैकवक्तुः प्रविभाति वाणी	कात्यायनी-सी रचना तुम्हारी
कात्यायनीवोद्धृतशस्त्रभारा।	है शोभती उद्‌वृत शस्त्र–भारा

तुम्हारे व्याख्यान प्रसंग में दुष्ट शत्रुओं की दुराचारण का स्मरण करने वाली और क्रोध युक्त औद्धत्य पूर्ण गति से दौड़ने वालीं तुम्हारी वाणी अपना शस्त्र संभार उठाये शत्रु पर प्रहार करने के लिए उद्यत कात्यायनी के समान सुशोभित होती है अपनी वाणी से तुम जवशत्रुओं की कूटनीति का पर्दाफाश करने हो तो तुम्हारा अद्वितीय वक्तृत्व कात्यायिनी के समान वीरत्व की प्रति मूर्ति हो जाता है।

[९०]

टङ्कारझङ्कारशङ्करः

सत्तर्करुक्षं मधुकाव्यसान्द्रं	सत्तर्क रुक्षा, मधु-काव्य–सांद्रा
वचस्तवोजोमधुरं विभाति।	शब्दावली शोभित वक्तृता है।
सकिंकिणीजाल पिनाकपाणेः	कांची-विशोभी शिव-चाप में ज्यों
टङ्कार झङ्कार-सुसङ्कराभम्॥	टंकार झंकार सुमित्रता है॥

श्रेष्ठ तर्कों से रुक्ष कठोर पर मदुर काव्य रस से पूर्ण ओज एवम् माधुर्य से पूर्ण तुम्हारा भाषण किंकिणी (घंटियों) के [illegible] मिश्रित शंकर के धनुष की उग्र टंकार के समान भासित होता है।

८ स्तबक

[९१]

भारतभञ्जनव्यथा -

दूरीकृतां भारतभञ्जनेन
विज्ञायसिन्धुं हृदयं त्वदीयम् ।
सिन्धुत्वपूर्णं सविशेषतो यत्
किमश्रु रूपेण बहिः प्रयाति ।।

परे हुई सिन्धु विभाजनों से
विजानते ही हियरा तुम्हारा ।
भरा हुआ जो शुचि हिन्दुता से
बहा रहा है नित अश्रु धारा ।।

तुम्हारा हृदय भारत की दशा पर आंसू बहाता है क्योंकि तुम्हारा हृदय सिन्धुत्व पूर्ण सिन्धु है फारसी में स को ह पढ़ा जाता है अतः सिन्धु हिन्दु है। यह भारत की दुर्दशा को देखकर ही तुम्हारे हृदय सिन्धु से अश्रु बहते हैं।

[९२]

अश्रुभूतम् मानसम् -

दूरीकृतां भारतभञ्जनेन
सिन्धुं स्वकन्यामिवचिन्तयित्वा ।
दुःखाकुलं मानसमन्तरस्थम्
अश्रुप्रवाहैस्तव धावतीव ।।

परे हुई हिन्द विभक्ति से है
समादृता मानस राज–कन्या ।
त्वदीय अभ्यन्तर शोक में हैं
भरी व्यथा है जिसमें अनन्या ।।

यह सिन्धु नदी मानस मानसरोवर की पुत्री के समान है भारत की दुर्दशा से सिन्धु नदी अन्य देश में चली गई यह भारत के लिए एक कलंक समान है इसीलिए मानों दुःख से व्याकुल तुम्हारा अन्तस्थ मानस ही अश्रु प्रवाह रूप में सिन्धु रूप बन गया है।

[९३]

एकीकृता ग्रहमण्डली –

नूनं त्वता वाक्पतिनाबुधेन	वाणीश बुद्ध्यन्वित,मित्र भौमा
मित्रेण भौमेन कलावता च ।	संपुष्ट त्वद्देह कलावती थी ।
नृसैंहिकेयेन शनैश्चरेण	शनैश्चरी सैंहिक वृत्ति युक्ता
एकीकृताऽसौ ग्रहमण्डलीह ॥	एकीकृतासीग्रह-मण्डली थी ॥

निश्चय ही तुम वाक्पति (बृहस्पति) बुद्ध विज्ञान, मित्र, सूर्य, भौम, भारत के नृसैंहिकेय मनुष्यसिंह (राहु) एवम् शनैश्चर धीरे कार्य करने वाले शान्त रूप हो तुमने अकेले ही आकाश स्थित ग्रह मंडली को एकत्र कर लिया है । तुम्हारे रूप में समग्र ग्रह मण्डली एकत्रित हो अर्थात तुम में सभी ग्रहों के लक्षण घटते हैं ।

[९४]

जन्मकृतार्थता –

गुणैरनर्घैश्चरितैरुदारैः	उदारता युक्त महागुणों से
त्वयास्वराष्ट्रप्रमुखत्वमाप्य ।	स्वराष्ट्र में हे प्रमुखत्व धारा
कृतार्थतां प्रापितमत्र लोके	कृतार्थ सारे भुवि लोक में है
पुण्यार्जितं तन्नरजन्म नूनम् ॥	पुमान का जन्म हुआ तुम्हारा ॥

तुमने अपने विशिष्ट गुणों तथा उदारचरित से देश में प्रमुख स्थान प्राप्त किया है और इस संसार में अर्जित मनुष्यजन्म को कृतार्थ किया है ।

[९५]

गीतारहस्यमिव चरितम् –

यल्लोकमान्यमतितत्त्वविचिन्तनोत्थं जो लोकमान्य गुरु के उठ चिंतन से
यद्भारतान्तरविमोहविनाशकारि है नाशता सत्रल भारत मोह कार
निष्कामकर्मरमं परमर्मभेदि निष्काम कर्म रत सा पर मर्म भेदी
गीतारहस्यमिव ते चरितं प्रसिद्धम् सर्वत्र भू पे शुभता प्रसारें ॥

गीता पर लोकमान्य तिलक की गीता रहस्य नामक टीका है। हे वीर तुम्हारा चरित्र गीता रहस्य के समान लोकमान्य अतितत्त्व विचिन्तन से पूर्ण रहस्य मय है जा भारत के अन्तर हृदय के मोह-अज्ञान का विनाशक है (गीता रहस्य अर्जुन के मोह का विनाशक हुआ) तथा गीता रहस्य के समान तुम्हारा चरित भी निष्काम परक है। एवम् तुम्हारा चरित गीता के रहस्य के समान परमर्म भेदी विरोधी मत खण्डक शत्रु मर्मभेदक है। इस प्रकार तुम्हारा चरित गीता रहस्य के समान प्रसिद्ध है।

[९६]

मङ्गलाशंसनम् :–

याः सङ्गताःसिन्धुसमुद्रतोयैः जो सिन्धु गंगा जलराशियों में
गङ्गासमुद्राम्बुभिरुत्तरङ्गैः। निर्बाधरूपेण सदा सिधारें
ता भारतीयाःसरितःपवित्राः वे पुण्यशीला नदियां, तुम्हारी
कुर्वन्तु सर्वास्तव मङ्गलानि ॥ सर्वत्र भू पे शुभता प्रसारें ॥

भारत की पवित्र नदियां जो सिन्धु समुद्र के जल में संगत होती हैं उज्वल तरंगवती गंगा आदि नदियां प्रवाहित सिन्धुसमुद्र होकर समुद संगत होकर गंगा सागर नाम से प्रसिद्ध होती है यह पश्चिम में पश्चिम सागर और पूर्व सागर संगत भारतीय पवित्र नदियाँ आपका मंगल करें।
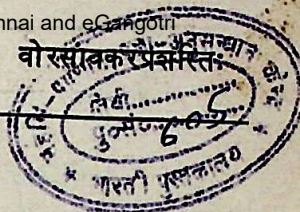
[९७]

श्री रामदासाङ्घ्रि पवित्ररेणुः	समर्थ आदेशक पाद मेघ्या
शिव प्रताप त्रपितोग्रभानुः	जहां शिवा से रवि भी लजायें।
सह्याद्रिभूषास्पदरत्नसानुः	सह्याद्रि भूषा वह दुर्ग माला
स दुर्गसङ्घस्तव शंकरोऽस्तु ।।	सदा तुम्हारी शुभता रचायें ।।

महाराष्ट्र दुर्ग समूह जो समर्थ गुरु रामदास के चरणरज से पवित्र है। महाराज शिवाजी के उग्र प्रताप से जहां सूर्य भी लज्जित हो जाता है सह्याद्रि पर्वत माला के समान रत्नजड़ित शिखरों के समान उच्चता प्राप्त ऐतिहासिक महाराष्ट्र दुर्ग संघ आपका मंगल करे।

[९८]

अतिसमर्थमहापुरुषार्थिनम्	अति समर्थ महा पुरुषारथी
नवयुगीनमहापुरुषोत्तमम्	नवयुगीन पुमान महामना।
कुरु सनातन सत्पुरुषोत्तम	शुभ सनातन वृत्ति प्रदायिनी
करुणया पुरुषायुषजीविनम् ।।	करुणया पुरुषायुष तू बना ।।

अत्यन्त समर्थ एवम् महापुरुषार्थी नवयुग के उत्तम पुरुष सावरकर को हे सनातन पुरुषोत्तम (विष्णु) आप अपनी कृपा से पुरुषायुषी करें।

[९९]

यावत्प्रोन्नत सानुभिर्हिमगिरी रक्षत्ययं मेदिनीं
यावच्छंकरशेखरात्प्रवहते गङ्गाप्रवाहो भुवि ।
यावच्चन्द्रदिवाकरौ गगनतो यातो न चाधस्तलम्
हिन्दूनामियमार्यभूरिति भवेत् तावन्मनोनिश्चयः ।।

यावत् सानु समेत शैल हृशिता रक्षा करे भूमि की
यावत् शंकर शीर्ष से मधुमती देवापगा सोहती ।
यावत् चन्द्र गभस्तिमान गिरते नीचे नहीं व्योम से
आर्यों को यह भूमि हिन्दु प्रसवा तावत् रहे मोहती ।।

जब तक अपने उत्तुंग शिखरों से मंडित हिमालय इस भारत भूमि की रक्षा करता है और जब तक शंकर (हिमालल) से पृथिवी पर गंगा प्रवाहित है। जब तक सूर्य और चन्दमा गगन से पृथ्वी पर नहीं जाते अर्थात जब तक आकाश में चन्दमा सूर्य विराजमान है। तब तक यह आर्य भूमि हिन्दुओं की यह है निश्चय जनमानस में सदा बना रहे।

[१००]

ऋषिचरणसरोजैरञ्जिता पावनैः या
नरवर-शुभकृत्यैर्भूषितोर्जस्वलैश्च ।
बुधजन-परिदीप्तैर्दीपिता ज्ञानदीपैः
जयतु जयतु शश्वन्मङ्गलामातृभूमिः ।

ऋषिचरण पदों से जो रही है पुनीता
नर-वर शुभ कर्मों का जहां चक्र घूमा ।
बुधजन-परिदीप्तों से सदा दीपिता जो
जयतु जयतु आर्यों की शुभा मातृ भूमा

ऋषियों के पावन चरण कमल रज से पवित्र अलंकृत नरश्रेष्ठ भारत के यशस्वी राजाओं के शुभ कृत्यों से विभूषित व्यास, शंकर आदि के ज्ञान दीपों से आलोकित्त यह मातृ भूमि सदा चिरकाल विजयी हो।

* इति शुभम् *

अध्यक्ष उत्तर प्रदेश हिन्दूमहासभा का संदेश

यदि आप

स्वातन्त्र्य वीर सावरकर जी

के विचारों एवं व्यक्तित्व से प्रभावित हैं और

उनकी विचारधारा को सही समझते हैं तो

हिन्दू महासभा

को बलशाली बनाने में सहयोग दीजिए।

युग की माँग समन्वय की एक दृष्टि

हम आर्य(श्रेष्ठ) संस्कृति के उपासक हैं इसलिये आर्यसमाजी हैं।
हम सृष्टि के आदि धर्म के उन्नायक है इसलिये सनातनी हैं।
हम बुद्धि गम्य धर्म के अनुयाई है इसलिये बौद्ध हैं।
हम जियो औरजीने दो के सिद्धान्त पर विश्वास करते हैं। इसलिये जैन हैं।
सदा सीखने की जिज्ञासा रखते है इसलिये सिख हैं।
परोपकारी यजन कर्म के प्रतिपादक है इसलिये पारसी हैं।

इसलिये हम सब मिलकर हिन्दू हैं।

शाश्वत सुख और शान्ति

के लिए

मानव समाज की पुरातन व्यवस्था और अध्यात्मवाद में

आस्था रखकर आधुनिक भौतिक तथा अणुकाल में

भी जिया जा सकता है।

हमारे देश के विद्वानों ने गम्भीर चिंतन के फलस्वरूप विविध शास्त्रों के रूप में अनुभूत सूत्रों द्वारा ज्ञान विज्ञान की निधि हमें दी है। परन्तु अज्ञानवश,

हम पाश्चात्य व्यवस्था के अनुगामी बन कर दुख और क्लेश की ओर बढ़ रहे हैं। उनके रसास्वादन के लिए हमारे पास न समय है ओर न रुचि

किन्तु याद रखिए

जिस प्रकार शरोर को भोजन और औषधियों की आवश्यकता होती है उसी प्रकार आत्मा को ज्ञान ओर सद्विचारों की। भोजन में रुचि न होने पर हम शांत नही बैठते, रोग समझ कर चिकित्सा कराते हैं। साहित्य के विषय में भी अरुचि या प्रमाद होने पर हमें चिंतित हो जाना चाहिए, सतत अभ्यास तथा श्रद्धा द्वारा अपने रोगी मन को स्वस्थ बनाकर आत्मिक भूख बढ़ाने का यत्न करना चाहिए।

तो आइए ! ऐसे मानवों की सेवा के लिए स्वाध्याय संस्थान बदायूँ कृतसंकल्प है, जहाँ

दुर्लभ एवं बहुमूल्य साहित्य के निशुल्क अध्ययन की व्यवस्था है। आत्मज्ञान के पिपासु एवं शोधकर्त्ता लाभ उठावें

शुभ सम्मति

कवि मनीषी श्री सोहन लाल वर्मा

अध्यक्ष अखिल भारतीय स्वर्णकार संघ

यद्यपि विनायक वैजयन्ती के स्वातंत्र्य वीर शतक के रूप में अनुवादित कृति का दर्शन करने का सौभाग्य अधिक समय नही मिला किंतु तो भी जो देखा वह अत्यन्त सरस एवं हृदयग्राही लगा। आजकल ऐसी प्राँजल संस्कारनिष्ठ भाषा देखने में नही आती। आये भी कहां से क्योंकि यों तो देश के ही संस्कार नष्ट हुए हैं और कविता के नाम पर तो कवि महाशय जो कुछ कर रहे हैं, भगवान रक्षा करें।

स्वातंत्र्य वीर-सावरकर देश के दुर्भाग्य से अभी तक एक ऐसे रत्न रहे हैं, जिनका मूल्यांकन नहीं हो सका है अपितु यह कहूं तो भी अतिशयोक्ति नहीं होगी कि इस ज्वाला को ढकने के लिये निरन्तर क्षार आयात की गई है। श्री देवेन्द्र कुमार 'देव' निस्संदेह अभिनंदन के पात्र हैं कि उन्होंने भारत माता, सरस्वती एवं हिंदु संस्कृति की त्रिवेणी की एक साथ आराधना की है। अपना यह शतक लघु होते हुए भी हिंदुत्व के तिमिर का सूर्य मंडल के समान हरण करें यह मेरी परमेश्वर से प्रार्थना है।

आवश्यक सूच

पुस्तकालयों एवं विद्यार्थियों को, संग्र
परिवार में पठनीय स्वाध्याय संस्थ
प्रकाशन क्रयकर पढें व ल

वीर सावरकर प्र

महान क्रान्तिकारी का हिन्दू
वैचारिक चेतना की मशाल जिसका
है। आज तक हिन्दी साहित्य में जिसक
छन्द तथा गद्यात्मक अनुवाद सहित। मू

कन्या

महान लेखक स्व० रामनाथ 'सुमन' की अनुपम कृति जिसमें कन्या जीवन पर अच्छा विवेचनात्मक वर्णन किया गया है। शैशवावस्था से युवावस्था तक का भावात्मक विश्लेषण। मू० ३ रु०

ताज महल हिन्दू भवन

इतिहास का ऐसा वास्तविक तथ्य जिससे अब तक जन मानस को दूर रखा गया। अन्वेषणात्मक पुस्तक। मू० २ रु०

विशेष :- उपरोक्त तीनों पुस्तकें एक साथ मँगाने पर १० % कमीशन देय होगा।

प्रकाशक
विद्यावाचस्पति वैद्य राजाराम जिज्ञासु
अध्यक्ष
स्वाध्याय संस्थान, बदायूँ, (उ०प्र०)

संम्बन्धित प्रतिष्ठान
१- अलंकार आयुर्वेद सदन, शास्त्री जी मार्ग, बदायूँ
२- विद्या वस्तु भंडार, आर्य कन्या विद्यालय चौक, बदायूँ

* देवनागरी प्रेस २५, सिविल लाइन्स बदायूँ